بسم الله الرحمن الرحيم

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 27
Issue - 02

राह-ए-ईमान

फरवरी
2025 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
खान मामून अहमद

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी.. 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत)..4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 03-01-2025)..8
7. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी क़ुरान की महानता की रोशनी में.. 12
8. दावा मुसलेह मौऊद के संबंध में वैभवशाली घोषणा..25

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

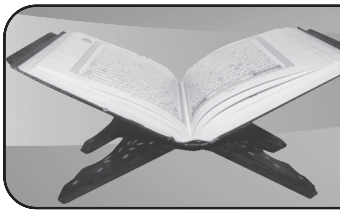

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवादः- 7-हे ईमान लाने वालो ! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने मुँह भी और कुहनियों तक अपने हाथ भी धो लिया करो तथा अपने सिरों का मसह किया करो एवं टख़नों तक अपने पाँव (भी धो लिया करो) और यदि तुम जुनुबी (अपवित्र) हो तो स्नान कर लिया करो एवं यदि तुम रोगी हो या यात्रा पर हो (तथा जुनुबी हो) अथवा तुम में से कोई शौचालय से आए और तुम ने स्त्रियों से मिलाप भी किया हो और तुम्हें पानी न मिले तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम् करो तथा उस से (पवित्र मिट्टी से कुछ मिट्टी ले कर) अपने मुँहों एवं अपने हाथों को मलो। अल्लाह तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहता। हाँ ! वह तुम्हें पवित्र करना और तुम पर अपना उपकार पूरा करना चाहता है ताकि तुम धन्यवाद करो। 8. और जो तुम पर अल्लाह का उपकार हुआ उसे (भी) याद रखो तथा उस वचन को भी जो उस ने तुम से उस समय लिया था जब तुम ने कहा था कि हम ने सुन लिया है और हम आज्ञाकारी हो गए हैं तथा अल्लाह के लिए संयम धारण करो। निस्सन्देह अल्लाह दिलों की बातों को भी भली-भाँति जानता है। (सूरह अल माइदा- 7-8)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवादः हज़रत अनस बताते हैं कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फतह मक्का के लिए मदीना से चले तो रमज़ान का महीना था। आपके साथ सब लोगों ने भी रोज़ा रखा। अक्सर साथी पैदल थे और हुज़ूर सवार थे। रास्ते में कदीद और सिफ़ान के बीच एक चश्मा (जल स्रोत) के पास से गुज़रना हुआ लोगों को बहुत प्यास लग रही थी। हुज़ूर से निवेदन किया गया कि रोज़ा के कारण लोगों को भारी परेशानी हो रही है और वह हुज़ूर की ओर देख रहे हैं कि आप क्या करते हैं। हुज़ूर ने कहा। हे लोगो! पानी पी लो, मैं तो सवार हूँ और मुझे कोई ऐसी प्यास नहीं। लेकिन लोगों ने पानी न पिया उस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सवारी से उतरे और असर के बाद का समय था। हुज़ूर ने पानी का प्याला मंगवाया और (बावजूद ज़रूरत न होने के पानी) पी लिया। लोगों ने भी आपको देखकर पानी पिया। इसके बाद आपको जानकारी दी गई कि अभी भी कुछ लोगों ने रोज़ा रखा है और उन्होंने पानी नहीं पिया। इस पर आप ने फरमाया ये लोग अवज्ञाकारी हैं। ये लोग अवज्ञाकारी हैं।

(मुस्लिम किताबुस्सौम, तिर्मिज़ी)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

21 जनवरी 1903 ई० (इशा से पूर्व सभा)

हज़रत अक़्दस हमेशा की तरह नमाज़ मग़रिब अदा करने के बाद सभा के लिए विराजमान हुए। मास्टर अब्दुल रहमान साहिब नौ मुस्लिम ने एक विज्ञापन का एक लेख हज़रत अक़्दस को पढ़ कर सुनाया जो कि उन समस्त नौ मुस्लिमों की ओर से, जिनको कि हज़रत अक़्दस के शुभ हाथों पर बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, हिन्दू और आर्यों के बड़े-बड़े सदस्यों की सेवा में प्रस्तुत किया जाता है। इस में उन्होने निवेदन किया है कि यदि उनके निकट यह नौ मुस्लिम जमाअत इस्लाम धर्म को स्वीकार करने में गलती पर है तो वह उनके द्वारा प्रस्तुत की गई सत्य की कसौटी (जोकि हज़रत अक़्दस के मुबहला (शास्त्रार्थ) के लेखों तथा मुक़ाबलों से लिए गए हैं) के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा साहिब से फ़ैसला कर के उनका गलती पर होना सिद्ध कर दें।

हज़रत अक़्दस ने इस प्रस्ताव को पसंद किया और कहा कि :-

धर्म का उद्देश्य यही नहीं है कि केवल स्वर्ग में ख़ुदा से लाभ प्राप्त हो अपितु इस वर्तमान युग में भी ख़ुदा से लाभ प्राप्त करना चाहिए। इन लोगों के केवल दावे ही दावे हैं इनसे कोई काम तक़्वा और विश्वास का सिद्ध नहीं होता। मुसीबत आए तो प्रत्येक अवैध (नाजाइज़) काम के लिए तैयार हो जाते हैं।

मुसद्दिक (अर्थात जो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानता है उस) के पीछे नमाज़

अजब खान साहिब तहसीलदार ने हज़रत अक़्दस से पूछा कि क्या यदि किसी क्षेत्र के लोग अजनबी हों और हमें ज्ञान न हो कि वे अहमदिया जमाअत में हैं या नहीं तो उनके पीछे नमाज़ पढ़ी जाए या नहीं?

फरमाया :- अपरिचित इमाम से पूछ लो यदि वह मुसद्दिक हो तो नमाज़ उसके पीछे पढ़ी जाए अन्यथा नहीं। अल्लाह तआला एक जमाअत अलग बनाना चाहता है इसलिए उसके इरादे का विरोध क्यों किया जाए जिन लोगों से वह अलग करना चाहता है बार-बार उनमें घुसना यही तो उसकी इच्छा के विरुद्ध है।

एक अहमदी के कर्तव्य

फिर तहसीलदार साहिब ने पूछा कि अपने स्थान पर जा कर हमारा बड़ा कार्य क्या होना चाहिए?

फरमाया :- हमारे पैग़ाम को लोगों को सुनाया जाए। हमारी शिक्षा से उन को अवगत करवाया जाए। तक़्वा और एकेश्वरवाद और वास्तविक इस्लाम उनको सिखाया जाए।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

मौलवी रुसुल बाबा साहिब अमृतसरी की पुस्तक हयातुल मसीह पर एक और दृष्टि तथा एक हज़ार रुपए इनामी जमा कराने के लिए निवेदन

...अत: अब तनिक आंखे खोल कर देख लेना चाहिए कि जब 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' के शब्द में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत ईसा दोनों सम्मिलित हैं जैसे यह आयत दोनों के बारे में आई है तो इस आयत के चाहे जो भी अर्थ करो दोनों उसमें सम्मिलित होंगे, तो यदि तुम यह कहो कि यहां "तवफ्फा" के मायने जीवित आकाश पर उठाया जाना अभिप्राय है तो तुम्हें इक़रार करना पड़ेगा कि इस जीवित उठाए जाने में हज़रत ईसा की कुछ विशेषता नहीं बल्कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, क्योंकि आयत में दोनों की समान भागीदारी है। परन्तु यह तो ज्ञात है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जीवित आकाश पर नहीं उठाए गए बल्कि मृत्यु पा चुके हैं और मदीना मुनव्वरा में आपकी मुबारक क़ब्र मौजूद है, तो फिर इससे तो बहरहाल स्वीकार करना पड़ा कि हज़रत ईसा भी मृत्यु पा चुके हैं और फिर मेहरबानी तो यह कि हज़रत ईसा की भी शाम (सीरिया) के देश में क़ब्र मौजूद है। हम अधिक सफाई के लिए हाशिए में बिरादरम हुब्बी फ़िल्लाह सय्यद मौल्वी मुहम्मद अस्सईदी तराबिलसी की गवाही दर्ज करते हैं और वह तराबिलस शाम (सीरिया) देश के निवासी हैं और उन्हीं की सीमाओं में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र है। और यदि कहो कि वह क़ब्र नकली है तो इस नकली का प्रमाण देना चाहिए और सिद्ध करना चाहिए कि यह नकल किस समय बनाई गई है और इस स्थिति में दुसरे नाबियों की क़ब्रों के बारे में भी संतुष्टि नहीं रहेगी। और सुरक्षा जाती रहेगी तथा कहना पड़ेगा कि शायद वे समस्त क़ब्रें बनावटी (जाली) ही हों। बहरहाल आयत 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' से यही मायने सिद्ध हुए कि मार दिया। कुछ नाम के मौलवी मुर्ख कहते हैं कि यह तो सच है कि इस आयत फ़लम्मा तवफ्फैतनी के मायने मारना ही हैं न कि कुछ और परन्तु वह मृत्यु उतरने के पश्चात् घटित होगी और अब तक घटित नहीं हुई।

परन्तु अफ़सोस कि ये मूर्ख नहीं समझते कि इस प्रकार से आयत के मायने खराब हो जाते हैं। क्योंकि आयत के मायने तो यह हैं कि हज़रत ईसा ख़ुदा के सामने कहेंगे कि मेरी उम्मत के लोग मेरे मरने के बाद बिगड़े हैं। अर्थात् जब तक मैं जीवित था वे सब सीधे मार्ग पर क़ायम थे और मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरी उम्मत बिगड़ गई न कि मेरे जीवित रहते।

फिर यदि यह कहा जाए कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की अब तक मृत्यु नहीं हुई तो साथ ही यह भी इक़रार करना पड़ेगा कि उनकी उम्मत भी अब तक बिगड़ी नहीं। क्योंकि आयत अपने सन्दर्भ से स्पष्ट तौर पर बता रही है कि उम्मत नहीं बिगड़ेगी जब तक कि उनकी मृत्यु न हो जाए। और 'फौत' का शब्द

या यों कहो कि मरने की वास्तविकता बहुत स्पष्ट है जिसको समस्त संसार जानता है। और वह यह कि जब एक मनुष्य को "फौतशुदा" (मृत्यु पाया हुआ) कहेंगे तो इस से यही अभिप्राय होगा कि मृत्यु के फ़रिश्ते ने उसकी रूह को क़ब्ज़ करके (निकाल कर) शरीर से अलग कर दिया है। अब इन्साफ़ करने वाले इन्साफ़ से बताएं कि हज़रत ईसा की मृत्यु पर इस से बढ़कर क्या प्रमाण होगा और क्या संसार में इस से बढ़कर तार्किक फ़ैसला संभव है जो इस आयत ने कर दिया। फिर इसके मुकाबले पर यहुदियों की तरह ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम को अक्षरांतरण (अक्षरों में परिवर्तन करके) तथा गन्दे दिल के साथ अपनी ओर से उसमें मायने गढ़ना यदि पाप और नास्तिकता की पद्धति नहीं है तो और क्या है। इन्साफ़ यह था की यदि इस ठोस और निश्चित सबूत को मानना नहीं था तो उसका खण्डन करके दिखाते। परन्तु हमारे विरोधियों ने ऐसा नहीं किया और तुच्छ तावीलें करके तथा सच्चाई के मार्गों को पूर्णतया छोड़ कर हम पर सिद्ध कर दिया कि उन्हें सच्चाई की कुछ भी परवाह नहीं है।

उन्होंने ईसा के जीवित रहने के इन्कार को कुफ्र की बात तो ठहराया परन्तु आंख खोलकर न देखा कि क़ुर्आन और अन्तिम युग के नबी दोनों शब्द और भाषा में सहमत हज़रत ईसा की मृत्यु को मानते हैं। इमाम मालिक जैसे महान इमाम वफ़ात (मृत्यु) के कायल हो गए और इमाम बुख़ारी जैसे युग के मान्य हदीस के इमाम ने केवल मृत्यु को सिद्ध करने के लिए दो भिन्न-भिन्न स्थानों की आयतों को एक स्थान पर एकत्र किया, इब्ने क़य्यिम जैसे मुहद्दिस ने 'मदारिजुस्सादिक़ीन' में मृत्यु का इक़रार कर दिया। ऐसा ही अल्लामा शेख अली बिन अहमद ने अपनी पुस्तक सिराजे मुनीर में उनकी मृत्यु को स्पष्ट किया। मो'तज़िल: के बड़े-बड़े उलेमा मृत्यु को मानने वाले गुज़र गए। परन्तु अभी तक हमारे विरोधियों की दृष्टि में हज़रत ईसा के जीवित रहने पर इज्मा ही रहा। यह खूब इज्मा है। ख़ुदा तआला इन लोगों के हाल पर रहम करे यह तो हद से गुज़र गए। जो बातें अल्लाह और रसूल के कथन से सिद्ध होती हैं उन्हीं को कुफ्र की बातें ठहराया। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

अब हम इस बात को अधिक लम्बा करना नहीं चाहते और न हम जतलाना चाहते हैं कि मौलवी रुसुल बाबा साहिब की पुस्तक 'हयातुलमसीह' कितनी निराधार और निरर्थक बातों से भरी है। किन्तु अत्यावश्यक बात जिसके लिए हमने यह पुस्तक लिखी है कि कथित मौलवी साहिब ने अपनी कथित पुस्तक में केवल जनता का दिल ख़ुश करने के लिए ये कुछ शब्द भी मुंह से निकाल दिए हैं कि यदि हमारे मसीह के जीवित रहने पर हमारे तर्कों का खण्डन करके दिखा दें तो हम हज़ार रुपया देंगे। यद्यपि तर्कों का हाल तो मालूम है कि कथित मौलवी साहिब ने अकारण कुछ पृष्ठ काले करके अपना एक पुराना पर्दा फाश किया और ऐसी निरर्थक बातें लिखी कि हम दो नामों के अतिरिक्त तीसरा नाम रख ही नहीं सकते अर्थात् या तो वे केवल दावे हैं जिनको तर्क कहना अनुचित और मूर्खता है और या यहुदियों की तरह पवित्र क़ुर्आन का अक्षरांतरण है इस से अधिक कुछ नहीं। (शेष.....)

(पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 63-67)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

धरती तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती
अगर तुम्हारा आकाश से **अटूट नाता** है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए फरमाते हैं :

"**अतः हे वे समस्त लोगो!** जो स्वयं को मेरी जमाअत में शामिल करते हो आकाश पर तुम उस समय मेरी जमाअत में शुमार किए जाओगे, जब वास्तव में सदाचार के मार्गों पर चलोगे। अतः अपनी पांचों समय की नमाज़ों को ऐसे भय और तल्लीनता से पूरा करो कि जैसे तुम परमेश्वर को देख रहे हो और अपने रोज़ों (उपवासों) को ख़ुदा के लिए पूरी सच्चाई के साथ पूरा करो। प्रत्येक जो ज़कात देने के योग्य है वह ज़कात दे और जिस पर हज का दायित्व आ चुका है और इस्लामी सिद्धान्तों को देखते हुए कोई बाधा या रोक नहीं वह हज करे। भलाई को अच्छे रंग में करो, बुराई की उपेक्षा करते हुए उसे तिलांजलि दो। निस्संदेह स्मरण रखो कि सदाचार रहित कोई भी कर्म ख़ुदा तक नहीं पहुँच सकता। प्रत्येक भलाई की जड़ **सदाचार** है। जिस कर्म में यह जड़ नष्ट नहीं होगी वह कर्म भी व्यर्थ नहीं जाएगा। ज़रूरी है कि दुख और परेशानियों से तुम्हारी परीक्षा भी हो, जिस प्रकार तुम से पूर्व ख़ुदा पर आस्था रखने वालों की परीक्षा हुई। अतः सावधान रहो। ऐसा न हो कि ठोकर खा जाओ। धरती तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती यदि तुम्हारा आकाश से **अटूट नाता** है। तुम जब भी अपना नुकसान करोगे तो अपने ही हाथों से करोगे न कि शत्रु के हाथों से। यदि तुम्हारा सांसारिक सम्मान पूर्णतया जाता रहे तो ख़ुदा तुम्हें आकाश पर वह सम्मान प्रदान करेगा जो कभी कम न हो। अतः तुम ख़ुदा को मत छोड़ो आवश्यक है कि तुम्हें दुःख दिया जाए और तुम्हारी अनेकों आशाओं पर पानी फिर जाए। पर इन समस्त परिस्थितियों में तुम निराश मत हो, क्योंकि तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारी परीक्षा लेता है कि तुम उसके मार्ग में दृढ़ हो या नहीं। यदि तुम चाहते हो कि आकाश पर फ़रिश्ते भी तुम्हारी प्रशंसा करें तुम मार खाओ और प्रसन्न रहो, ग़ालियां सुनो और आभार प्रकट करो, असफलता देखो पर ख़ुदा से नाता मत तोड़ो। तुम ख़ुदा की अन्तिम जमाअत हो। अतः ऐसे सुकर्म करो जो अपने गुणों की दृष्टि से सर्वोत्तम हों। प्रत्येक जो तुम में अलसी हो जायेगा वह एक अपवित्र वस्तु कि भांति जमाअत से बाहर फेंक दिया जायेगा और हसरत से मरेगा पर ख़ुदा का कुछ न बिगाड़ सकेगा। देखो **मैं बड़ी प्रसन्नता से यह सन्देश** देता हूँ कि तुम्हारा ख़ुदा वास्तव में मौजूद है, यद्यपि कि सबको उसी ने पैदा किया है, पर वह उस मनुष्य को चुन लेता है जो उसको चुनता है। वह उसके निकट आ जाता है, जो उसे सम्मान देता है वह उसको भी सम्मान देता है।

तुम अपने हृदयों को स्वच्छ, मुख, नेत्र और कणों को पवित्र करके ख़ुदा की ओर आ जाओ कि वह तुम्हें स्वीकार करेगा। आस्थानुसार ख़ुदा जो तुमसे चाहता है वह यही है कि वह एक और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके नबी है और वह समस्त नबियों की मुहर और सर्वश्रेष्ठ हैं। अब उसके पश्चात् कोई नबी नहीं परन्तु वही जिस को प्रतिबिम्ब स्वरूप मुहम्मद के रंग की चादर पहनाई गयी, क्योंकि सेवक अपने स्वामी से अलग नहीं और न शाखा अपने तने से अलग है। इन सब बातों के पश्चात मैं फिर

कहता हूं कि यह मत सोचो कि हमने प्रत्यक्ष रूप से बैअत कर ली है। प्रत्यक्ष कुछ नहीं ख़ुदा की दृष्टि तुम्हारे दिलों पर है और उसी के अनुसार तुमसे व्यवहार करेगा। देखो, मैं यह कहकर प्रचार के कर्तव्य से निश्चिन्त होता हूं कि पाप एक विष है इसको मत खाओ। ख़ुदा की आज्ञा का पालन न करना एक घृणित मृत्यु है, उससे बचो। प्रार्थना करो ताकि तुम्हें शक्ति प्राप्त हो। जो मनुष्य प्रार्थना के समय ख़ुदा को हर एक बात पर सर्व शक्तिमान नहीं समझता सिवाए उसके वायदों के अपवाद के, वह मेरी जमाअत में से नहीं। जो व्यक्ति झूठ और धोखाधड़ी को नहीं छोड़ता वह मेरी जमाअत में से नहीं। जो मनुष्य संसार के मोह में फंसा हुआ है, और आख़िरत की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य वास्तव में दीन (धर्म) को दुनिया पर प्राथमिकता नहीं देता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य पूर्ण रूपेण प्रत्येक बुराई और प्रत्येक दुष्कर्म अर्थात् मदिरा, जुआ, बुरी दृष्टि, ख़यानत, रिश्वत और प्रत्येक अनुचित व्यवहार से तौबा नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य प्रतिदिन पांचों समय की नमाज़ को अपने जीवन की दिनचर्या नहीं बनाता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य दुआ (प्रार्थना) में निरंतर लगा नहीं रहता और शालीनता से ख़ुदा का स्मरण नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य दुष्ट साथी को नहीं छोड़ता जो उस पर दुष्प्रभाव डालता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपने माता-पिता का आदर सम्मान नहीं करता और पुण्यादेशों में जो क़ुर्आनी शिक्षा के विरोधी नहीं, उन की आज्ञा का पालन नहीं करता और उनकी सेवा के कर्तव्य से लापरवाह है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपनी पत्नी और उसके संबंधियों से उदारता और शालीनता का व्यवहार नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपने पड़ोसी को तुच्छ से तुच्छ भलाई से भी वंचित करता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य नहीं चाहता कि अपने दोषी का दोष क्षमा करे और द्वेष भाव रखता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है।

प्रत्येक मनुष्य जो अपनी पत्नी से और पत्नी अपने पति से ख़यानत का व्यवहार करती है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य उस प्रतिज्ञा को जो उसने बैअत करते समय की थी किसी प्रकार भी तोड़ता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो वास्तव में मुझे मसीह मौऊद और महदी नहीं समझता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य पुण्यादेशों में मेरी आज्ञा पालन करने के लिए तैयार नहीं वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य विरोधियों के साथ बैठकर उनका समर्थन करता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। प्रत्येक बलात्कारी, दुराचारी, शराबी, खूनी, जुआरी, धरोहर को हड़पने वाला, घूस लेने वाला, दूसरों का अधिकार हनन करने वला, अत्याचारी, झूठा, पाखण्डी और उसका साथी, अपने भाई बहनों पर अनुचित आरोप लगाने वाला, जो अपने दुष्कर्मों को त्याग कर क्षमा याचना नहीं करता और बुरी संगत का परित्याग नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। यह सब विष हैं तुम इनका विषपान करके किसी भी प्रकार बच नहीं सकते। अन्धकार व प्रकाश एक स्थान पर इकट्ठे नहीं हो सकते। प्रत्येक मनुष्य जो पेचीदा स्वभाव रखता है और ख़ुदा के साथ स्वच्छ और पवित्र संबंध नहीं रखता वह उस अनुकम्पा को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता जो स्वच्छ और पवित्र हृदय वालों को प्राप्त होती है। (कश्ती नूह)

वक़्फ़े जदीद के सतासठ्वें (67वें) वर्ष में जमाअत के लोगों की ओर से पेश की जाने वाली क़ुरबानियों का वर्णन तथा अड़सठवें (68वें) साल के प्रारम्भ की घोषणा

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा एवं सूरः आले-इमरान की आयत संख्या ९३ की तिलावत के बाद इस आयत का अनुवाद बयान करते हुए हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

तुम नेकी को कदाचित नहीं पा सकते जब तक अपनी मन भावन वस्तुओं में से ख़ुदा तआला के लिए ख़र्च न करो, और जो कोई चीज़ भी तुम ख़र्च करो, अल्लाह उसे ख़ूब जनता है। फ़रमाया- एक वास्तविक मोमिन जो अल्लाह तआला की राह की तलाश में रहता है, उसे उन राहों की खोज करते रहना चाहिए जो ख़ुदा तआला की निकटता पाने की रहें हैं। अल्लाह तआला की राह में धन उपयोग में लाने को भी ख़ुदा तआला ने एक नेकी फ़रमाया है, इस आयत में भी यही विषय है कि वह धन जिससे तुम प्रेम करते हो, यदि वह ख़ुदा की राह में ख़र्च करोगे तो तब यह बड़ी नेकी होगी। निःसन्देह अल्लाह तआला हर एक नेकी का बदला देता है, परन्तु इंसान को क्यूँकि धन का मोह होता है इस लिए इसकी ओर विशेष रूप से ध्यान दिलाया गया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस आयत के बारे में फ़रमाया कि धन से मोह नहीं लगाना चाहिए। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम कदापि नेकी को नहीं पा सकते जब तक उन चीज़ों में से अल्लाह की राह में ख़र्च न करो जिन से तुम प्यार करते हो। अगर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के साथ इस ज़माने का मुक़ाबला किया जाए तो खेद होता है, क्यूँकि प्राणों से बढ़ कर कोई वस्तु प्यारी नहीं होती और उस ज़माने में प्राण ही देने पड़ते थे। तुम्हारी तरह वे भी पत्नी और बच्चे रखते थे, जान सबको प्यारी लगती है, किन्तु वे सदा इस बात का चाव रखते थे कि अवसर मिले तो अल्लाह तआला की राह में जान क़ुर्बान कर दें। हुज़ूर अलै. ने फ़रमाया- व्यर्थ और तुच्छ चीज़ों को ख़र्च करने पर कोई इन्सान

नेकी का दावा नहीं कर सकता, नेकी का द्वार संकीर्ण है, अत: यह बात मस्तिष्क में बिठा लो कि तुच्छ चीज़ों के ख़र्च करने से कोई उसमें दाख़िल नहीं हो सकता, क्यूँकि स्पष्ट आयत है कि

لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰى تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ

अर्थात-जब तक अति मनमोहक एवं प्रिय से प्रियतम चीज़ को ख़र्च नहीं करोगे, उस समय तक प्यारा एवं प्रिय होने का स्तर नहीं मिल सकता। आप अलै. फ़रमाते हैं कि क्या सहाबा किराम रज़ी. मुफ़्त में इस स्तर को पहुँच गए? सांसारिक पदों को प्राप्त करने के लिए कितने अधिक ख़र्चे और परिश्रम सहन करने पड़ते हैं तब कहीं जाकर एक तुच्छ पदवी, जिससे मन को शान्ति एवं संतुष्टि प्राप्त नहीं हो सकती, मिलती है। फिर ख़याल करो कि रज़िअल्लहु अन्हुम का पद जो दिल की शान्ति, मन का संतोष एवं मोलाए करीम के प्रसन्न होने का निशान है, यूं ही सरलता पूर्वक मिल गया? फ़रमाया- ख़ुदा ठगा नहीं जा सकता, मुबारक हैं वे लोग जो अल्लाह की खुशी पाने के लिए कष्टों की चिन्ता न करें, क्यूँकि स्थाई ख़ुशी और सदेव के आराम की रोशनी इस अस्थाई कष्ट के बाद मोमिन को मिलती है। दुनिया में इंसान धन से अत्यधिक लगाओ रखता है इसी कारण से स्वप्नफल की विद्या में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति सपने में देखे कि उसने जिगर निकाल कर किसी को दिया है तो उसका मतलब धन है।

आज अहमदिय्या जमाअत के लोगों ने इस बात को भली भाँती समझ लिया है कि वास्तविक नेकी तक पहुँचने के लिए इस धन को ख़र्च करना अनिवार्य है, जो प्रियतम चीज़ है। यह नि:सन्देह हज़रत मसीह मौऊद अलै. की तरबियत का प्रभाव है कि आज तक यह बलिदान के स्तर हम देखते चले जा रहे हैं, वे स्तर जो सहाबियों रज़ी. ने स्थापित किए और फिर जिनको हज़रत मसीह मौऊद अलै. के ज़माने में आपके सहाबा रज़ी. ने क़ायम किया। फिर इसके बाद ख़िलाफ़त के हर दौर में ये कुर्बानियां हम देखते चले आ रहे हैं, आज तक यही कुर्बानियां हमें नज़र आ रही हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं- मैं नि:सन्देह जनता हूँ कि कंजूसी और ईमान एक दिल में जमा नहीं हो सकते........क़ौम को चाहिए कि हर तरह से इस सिलसिले की सेवा में लगी रहे, धन देकर भी सेवा करने से पीछे नहीं हटना चाहिए। देखो! दुनिया में कोई सिलसिला चन्दे के बिना नहीं चलता........ सब रसूलों के युग में चन्दे जमा किये गए। अत: हमारी जमाअत के लोगों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यदि ये लोग जतन करके एक एक पैसा भी साल भर में दें तो बहुत कुछ हो सकता है। इस हवाले से हुज़ूरे अनवर ने हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. के बलिदानों के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलै. के कुछ कथन पेश फ़रमाए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. ने एक अवसर पर हुज़ूर अलै. को लिखा कि हज़रत पीर व मुर्शद! मैं सम्पूर्ण विनयता के साथ निवेदन करता हूँ कि मेरी पूरी धन सम्पत्ति यदि दीन के प्रकाशन में लग जाए तो मैं सफल हो जाऊंगा।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ी. ने जब वक़्फ़े जदीद और तहरीके जदीद की प्रेरणा दी तो कुछ निर्धन लोगों ने थोड़ी थोड़ी धन राशि पेश की, कोई मुर्गा ले आया, कोई अंडा ले आया, कि हमारे पास जो कुछ था हमने पेश कर दिया। इसी के अंतर्गत हुज़ूरे अनवर ने हज़रत खलीफ़ा रशीदुद्दीन साहब रज़ी.

के आर्थिक सहयोग का विस्तारण बयान फ़रमाया तथा सहाबियों एवं बज़ुर्गों की कुछ बातें पेश करने के बाद फ़रमाया कि आज भी हमें ये नमूने हर जगह मिलते हैं। यह रूह हमें आज भी अहमदियों में नज़र आती है। इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने मार्शल आई लैंड्स, क़ज़ाकिस्तान, केमरोन, नाइजेरिया, गैम्बिया, तंज़ानिया, चेक रिपब्लिक इत्यादि देशों में घटित कुछ क़ुर्बानी के वृत्तांत पेश फ़रमाए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया इन्डिया से वहां के इन्सपैकटर साहब लिखते हैं कि एक दोस्त हैं, उनका वक़्फ़े जदीद का चन्दा चौबीस हज़ार था, कुछ ही दिन शेष थे उनके पास, कुछ धन राशि उनके पास थी जो एक महत्त्व पूर्ण दीन के काम में देनी थी। उन्होंने अल्लाह पर भरोसा करते हुए वह धन राशि चन्दे में दे दी। दूसरे दिन ही उन महोदय को व्यापार की एक बहुत बड़ी धन राशि, जो कहीं फंसी हुई थी वह अचानक मिल गई, तो अल्लाह तआला ने, देखें! उसको कहा कि अच्छा तुम मेरे लिए धन के मोह को छोड़ रहे हो और निजी आवश्यकताओं को त्याग रहे हो, जमाअत की आवश्यकताओं को पूरा करने की चेष्टा कर रहे हो, तो मैं तुम्हारी मदद करता हूँ। तो इस प्रकार अल्लाह तआला सहायता करता है। जमाअत के जो भी ख़र्चे हो रहे हैं, हमारे दुनिया में जो मिशन हैं, तहरीक ए जदीद और वक्फ़ जदीद के चन्दे ही हैं, जो शुद्ध रूप में केंद्र को आते हैं, शेष तो स्थानीय देशों में ही ख़र्च हो जाता है। ये सब ख़र्च इन्हीं चन्दों से हो रहे हैं। अफ़्रीक़ी देशों में जहाँ निर्धनता एक सामान्य बात है, यद्यपि वे चन्दे देते हैं परन्तु वहां मस्जिदें हैं, मिशन हैं, उनको चलाने के लिए धन चाहिए होता है। अफ़्रीक़ा में इस समय ७९५३ मस्जिदें बन चुकी हैं और ३०६ मस्जिदें निर्माणाधीन हैं। १८६० मिशन हाउसिज़ काम कर रहे हैं। चार सौ मर्कज़ी मुबल्लिग़ तथा दो हज़ार से अधिक मुअल्लिम काम कर रहे हैं। इसी तरह क़ादियन, साउथ अमरीका, जज़ायर इत्यादि देशों में धन ख़र्च होता है। लिट्रेचर के प्रकाशन तथा वितरण पर व्यय होता है, ये सारे ख़र्चे अल्लाह तआला अपनी कृपा से पूरे करता है।

अल्लाह ताआला ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. को यही फ़रमाया था कि धन तो मैं तुम्हें दूंगा और उस वादे के अनुसार धन दे भी रहा है। अल्लाह तआला जमाअत को सामर्थ्य प्रदान करे कि हम इस धन का सदुपयोग भी कर सकें, अल्लाह तआला सही ख़र्च करने की तौफ़ीक़ दे, कभी इसमें कोई अनियमिता न हो। हुज़ूरे अनवर ने वक़्फ़े जदीद के साल की पिछली रिपोर्ट के हवाले से फ़रमाया कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वक़्फ़े जदीद का ६७वां साल पूरा हुआ है। इस वर्ष में विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत को ख़ुदा तआला के समक्ष एक करोड़ छत्तीस लाख इक्यासी हज़ार पौंड अर्थात लगभग १४ मिलयन की माली क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली। यह वसूली गतवर्ष की तुलना में सात लाख छत्तीस हज़ार पौंड अधिक है और इसमें शामिल होने वालों की संख्या १५ लाख ५१ हज़ार है, अलहम्दुलिल्लाह।

वसूली की दृष्टि से पहली दस जमातें- बर्तानिया, केनेडा, जर्मनी, अमरीका, भारत, आस्ट्रेलिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, इंडोनेशिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, बेल्जियम। शामिल होने वालों की वृद्धि की दृष्टि से विशिष्ट जमाअतें- पाकिस्तान, नाईजेरिया, केमरून, गेम्बिया, कोंगो ब्राज़वेल।

भारत के प्रथम दस प्रदेश- केरला, तमिलनाडु, जम्मू एंड कश्मीर, कर्नाटक, तिलंगाना, ओडीशा,

पंजाब, वेस्ट बंगाल, महाराष्ट्र तथा उत्तर प्रदेश। भारत की पहली दस जमाअतें- कोइम्बतूर, क़ादियान, हैद्राबाद, कालीकट, मंजेरी, बंगलौर, मल्या प्ल्यालम, कोलकता, केरंग तथा केरोलाई।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला क़ुर्बानी करने वालों के जान और माल में अत्यधिक बरकतें अता फ़रमाए। नव वर्ष के विषय में दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया, दुआएं करें कि यह २०२५ का साल जमात के लिए बरकतों वाला साल हो। अल्लाह तआला जमाअत को हर एक उपद्रव से सुरक्षित रखे। पाकिस्तान में कट्टर पंथियों के दल हैं जो हर तरह का अत्याचार करने का प्रयास करते रहते हैं। अल्लाह तआला इन दुष्टों की पकड़ के जल्दी सामान फ़रमाए, अहमदियों को अपने शरण में रखे। रबवा पर भी इन लोगों की बड़ी नज़र रहती है, उसकी रक्षा भी अल्लाह तआला फ़रमाता रहे, और फ़रमाया- दरूद शरीफ़ तथा कुछ अन्य दुआओं की ओर मैंने कुछ समय पहले ध्यान दिलवाया था, इसी तरह पाकिस्तान, बंगला देश, शाम एवं अफ़्रीक़ा तथा अन्य देश हैं, हर एक देश में अल्लाह तआला अहमदियों को अपनी सुरक्षा में रखे। हर एक अहमदी का कर्तव्य है कि इसके लिए विशेष रूप से स्वयं भी बहुत दुआएं करें, अपने देशों के लिए भी और दुनिया की सामान्य स्थिति और युद्धों की परिस्थितियों के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनके बुरे प्रभाव से हर निर्दोष एवं पीड़ित को बचाए।

ये लोग नव वर्ष पर बड़े आयोजन करते हैं लेकिन प्रत्येक केवल अपनी खुशियाँ देखता है, दूसरों की पीड़ा का इन्हें एहसास नहीं है। शक्ति शाली क़ौमें, ग़रीब क़ौमों तथा पीड़ित लोगों पर अत्याचार करती चली जा रही हैं। अल्लाह तआला इस वर्ष में उन सब शक्तियों की योजानएं ध्वस्त कर दे और अल्लाह तआला की वहदानियत को हम दुनिया में क़ायम होता देखें, अल्लाह तआला हमें भी इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात - 18001032131

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी : क़ुरआन की अज़मत (महानता) की रोशनी में

(तक़रीर: श्री हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़ साहिब, एडीशनल नाज़िर-ए-आला दक्षिण भारत)

अनुवादक : सय्यद मोहिउद्दीन फरीद एम् ए

अल्लाह तआला पवित्र कुरान में फरमाता है :

وَقَالَ الرَّسُوۡلُ یٰرَبِّ اِنَّ قَوۡمِی اتَّخَذُوۡا ھٰذَا الۡقُرۡاٰنَ مَھۡجُوۡرًا

(सूर: अल् फ़ुरकान : 31)

"और रसूल कहेगा हे मेरे रब निसन्देह मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को मतरूक छोड़ दिया है।"

मुसलमानों पे तब अदबार आया
कि जब तालीम-ए-क़ुरआन को भुलाया

(दुर्रे-समीन)

ख़ाकसार की तक़रीर का विषय है "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी क़ुरआन की महानता की रोशनी में"

प्रिय पाठको ! सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंतिम युग में जिस मसीह मौऊद और मह्दी माहूद के आने की ख़ुश-ख़बरी दी थी उसके प्रकटन का महत्वपूर्ण उद्देश्य क़ुरआन-ए-करीम के फ़ज़ायल-ओ-कमालात और उसकी प्रतिष्ठा व सच्चाई का प्रकटन था। इसलिए जब सूर: अल् जुमा की आयत وَاٰخَرِیۡنَ مِنۡھُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِھِمۡ हुई तो सहाबा ने निवेदन किया : हे रसूलुल्लाह यह कौन लोग होंगे जिनको आप दुबारा आयात पढ़ कर सुनाएँगे, उन्हें पाक करेंगे और किताब और हिक्मत सिखाएँगे। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब ईमान सुरय्या सितारे पर चला जाएगा तो एक मर्द फ़ारस उसे वापस लाएगा। कुछ रिवायात में इलम या क़ुरआन के मतरूक होने का वर्णन है जिसकी प्रतिष्ठा और फ़ज़ीलत को दुबारा मसीह मौऊद ने दिलों में बिठाना था।

प्रिय श्रोताओं! गुमशुदा ईमान और मतरूक क़ुरआन की प्रतिष्ठा को दुबारा क़ायम करने के लिए अल्लाह तआला ने कादियान की इस गुमनाम बस्ती में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अवतरित फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम ने ऐलान फ़रमाया कि :

"अल्लाह तआला ने अपने वाअदा के मुवाफ़िक़ कि اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल्-हिजर : 10) क़ुरआन शरीफ़ की प्रतिष्ठा को क़ायम करने के लिए चौधवीं सदी के सिर पर मुझे भेजा।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ : 433)

एक बड़ी मुद्दत से दीन को कुफ़्र था खाता रहा
अब यक़ीं समझो कि आए कुफ़्र को खाने के दिन

प्रिय पाठको ! ज़माने की बुरी हालत का नक़्शा खींचते हुए आप अलैहिस्सलाम ने

यह ज़माना दरहक़ीक़त एक ऐसा ज़माना है जो मांग कर रहा है कि क़ुरआन शरीफ़ अपने इन समस्त भेदों को ज़ाहिर करे जो उसके अंदर छुपे चले आते हैं। ..अत: यक़ीनन समझो कि वह दरवाज़ा खोला गया है और ख़ुदा

तआला ने इरादा कर लिया है कि ता क़ुरआन-ए-करीम के गुप्त अजायबात इस दुनिया के मुतकब्बिर फ़लसफ़ियों पर ज़ाहिर करे। अब आधा मुल्ला दुश्मन-ए-इस्लाम इस इरादा को रोक नहीं सकते। अगर अपनी शरारतों से बाज़ नहीं आएँगे तो हलाक किए जाऐंगे और आकाशीय तमांचा हज़रत-ए-क़ह्हार का ऐसा लगेगा कि मिट्टी में मिल जाऐंगे। इन नादानों को हालत-ए-मौजूदा पर बिल्कुल नज़र नहीं। चाहते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम मग़लूब और कमज़ोर और ज़ईफ़ और हक़ीर सा नज़र आए लेकिन अब वे एक जंगी बहादुर की तरह निकलेगा। हाँ वह एक शेर की तरह मैदान में आएगा और दुनिया के समस्त फ़लसफ़ा को खा जाएगा और अपना ग़लबा दिखाएगा और لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ की भविष्यवाणी को पूरी कर देगा और भविष्यवाणी وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمْ को रूहानी तौर से कमाल तक पहुंचाएगा.. अब वह इब्ने मरियम जिसका रूहानी बाप ज़मीन पर सिवाए हक़ीक़ी मु'अल्लम के कोई नहीं जो इस वजह से आदम से भी समानता रखता है। बहुत सा ख़ज़ाना क़ुरआन-ए-करीम का लोगों में तक़सीम करेगा। यहां तक कि लोग क़बूल करते करते थक जाऐंगे और لَا يَقْبَلُهٗ اَحَدٌ का मिस्दाक़ बन जाऐंगे और प्रत्येक तबीयत अपने विचार के मुताबिक़ पुर हो जाएगी

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 464 से 467)

नूर-ए-फ़ुरक़ाँ है जो सब नूरों से अजला निकला
पाक वह जिससे यह अनवार का दरिया निकला

प्रिय श्रोताओं सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इक़्तेबास से वाज़िह है कि अंतिम युग में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा दो तरह से ज़ाहिर होगी एक لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ बैरूनी तौर पर समस्त अदयान पर क़ुरआन-ए-करीम के हक़ायक़ व दिकायक, उलूम और मारफ़ के खज़ाने ज़ाहिर करके समस्त अदयान पर क़ुरआन-ए-करीम की सदाक़त फ़ज़ीलत और अज़मत क़ायम की जाएगी और इस्लाम को ग़लबा अता किया जाएगा और दूसरी तरफ़ अंदरूनी तौर पर وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمْ के तहत उम्मत-ए-मुहम्मदिया में अल्लाह तआला और इस्लाम के बुनियादी अक़ायद के मुताल्लिक़ पैदा होने वाले संदेहों को क़ुरआन की तालीमात की दृष्टि से दूर कर के और अक़ायद-ए-फ़ासदा का अंत करके क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा क़ायम की जाएगी और दीन-ए-इस्लाम को मज़बूती अता की जाएगी।

प्रिय श्रोताओं! क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा और सदाक़त को समस्त अदयान पर ज़ाहिर करने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपनी जनाब से क़ुरआन-ए-करीम का ख़ास इलम और फ़हम अता फ़रमाया और आपकी तर्बीयत फ़रमाई। सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

मैं उस ज़ात की क़सम खा कर कहता हूँ कि जिसके हाथ में मेरी जान है कि इस (ख़ुदा) ने मेरी तरफ़ नज़र-ए-रहमत की और मुझे क़बूल किया और मुझ पर एहसान किया और मेरी तर्बीयत की और उसने अपने हुज़ूर से मुझे फ़हम अता किया जो सलीम था और ऐसी अक़्ल मुस्तक़ीम जो बग़ैर कजी के है अता की और कितने ही नूर हैं जो इस ने मेरे दिल में डाले और मुझे क़ुरआन की मार्फ़त अता की गई जो मेरे इलावा किसी और को नहीं दी गई और इस में से मैंने वह पाया और हासिल किया जो मेरा मुख़ालिफ़ कोशिश के बावजूद न पा सका और

मैं इस क़ुरआन को समझने में इस आली मर्तबा तक पहुंचा जहां तक अक्सर लोगों की अक़्लें पहुंचने से क़ासिर हैं (असमर्थ हैं)। (हुमामतुल बुशरा, रूहानी ख़ज़ायन,भाग 7 सफ़ा 284)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

यह तो सिर्फ अल्लाह तआला का फ़ज़ल है और इस की बेहद इनायत है कि वह चाहता है कि मेरे जैसे आजिज़ इन्सान के हाथ से उसके दीन की इज़्ज़त ज़ाहिर हो। मैंने एक वक़्त उन ऐतराज़ात और हमलात को शुमार किया था जो इस्लाम पर हमारे मुख़ालेफ़ीन ने किए हैं तो उनकी संख्या मेरे ख़्याल और अंदाज़ा में तीन हज़ार हुई थी और मैं समझता हूँ कि अब तो और भी संख्या बढ़ गई होगी। कोई यह न समझ ले कि इस्लाम का आधार ऐसी कमज़ोर बातों पर है कि इस पर तीन हज़ार ऐतराज़ हो सकते हैं। नहीं ऐसा हरगिज़ नहीं। यह ऐतराज़ात तो नासमझों और नादानों की नज़र में ऐतराज़ हैं। परंतु मैं तुमसे सच्च सच्च कहता हूँ कि मैंने जहां उन ऐतराज़ात को शुमार किया वहां यह भी ग़ौर किया है कि इन ऐतराज़ात के अधीन में दरअसल बहुत ही कीमती सदाक़तें मौजूद हैं जो अदम-ए-बसीरत की वजह से मोतरिजाना को दिखाई नहीं दीं और दरहक़ीक़त यह ख़ुदा तआला की हिक्मत है कि जहां नाबीना मोतरिज़ आकर अटका है। वहीं हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ का मख़फ़ी ख़ज़ाना रखा है और ख़ुदा तआला ने मुझे अवतरित फ़रमाया है कि मैं इन ख़ज़ायन मदफ़ूना को दुनिया पर ज़ाहिर करूँ और नापाक ऐतराज़ात का कीचड़ जो इन चमकते मोतियों पर थोपा गया है (अर्थात क़ुरआन-ए-करीम पर) उससे उनको पाक साफ़ करूँ। ख़ुदा तआला की ग़ैरत इस वक़्त बड़ी जोश में है कि क़ुरआन शरीफ़ की इज़्ज़त को हर एक ख़बीस दुश्मन के दाग़ ऐतराज़ से पवित्र और स्वच्छ करे। (मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ : 38)

वो ख़ज़ायहन जो हज़ारों साल से मदफ़ून थे
अब मैं देता हूँ अगर कोई मिले उम्मीदवार

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

ख़ुदा तआला मेरे हाथ से और मेरे ही माध्यम से दीन-ए-इस्लाम की सच्चाई और समस्त मुख़ालेफ़-ए-दीनों का बातिल होना साबित कर देगा मेरे हाथ से आसमानी निशान ज़ाहिर हो रहे है और मेरे क़लम से क़ुरआन के हक़ायक़ और मआरिफ़ चमक रहे हैं।

(तिरयाकुल् कलूब, रूहानी खज़ायन भाग 15 पृष्ठ 265 से 268)

प्रिय श्रोताओ! अल्लाह तआला ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सुलतानुल क़लम और आपकी क़लम को ज़ुल्फ़क़ार अली के ख़िताब से सरफ़राज़ आप अलैहिस्सलाम ने 90 के क़रीब लेखनियाँ लिखीं जो रूहानी ख़ज़ायन के नाम से सैट के रूप में उपलब्ध हैं। आपके तीन सौ विज्ञापन तीन जिल्दों में प्रकाशित किए हैं। मल्फ़ूज़ात की दस जिल्दें हैं, इलम-ओ-मार्फ़त से परिपूर्ण आपके सात सौ मकतूबात पाँच जिल्दों में शाय शूदा हैं। उर्दू मंजूम कलाम, फ़ारसी मंजूम कलाम, अरबी मंजूम कलाम और आपकी वर्णन करदा तफ़सीर उल-क़ुरआन अलग से शाय शूदा है।आप अलैहिस्सलाम ने अपनी इन तसानीफ़ में ,नज़्म विंसर में क़ुरआन-ए-मजीद की बुलद शान और उसके इंतेहाई बुलंद मुक़ाम को दुनिया पर ज़ाहिर फ़रमाया। इसके हुस्न बेमिसाल को आशकार करके एक दुनिया को इसका गरवीदा बना दिया और क़ुरआन-ए-करीम के बे शुमार हक़ायक़-ओ-दक़ायक़ और उलूम-

ओ-मआरिफ़ पर से पर्दा उठा कर उसके नूर-ए-हिदायत और एहसान को दुनिया के लिए आम कर दिया और सबसे बढ़कर यह कि आपने दलायल-ओ-बराहीन की दृष्टि से साबित फ़रमाया कि समस्त ज़मीन पर क़ुरआन ही वह आलमगीर शरीयत है जो सही अर्थों में ता क़यामत एक ज़िंदा शरियत कहलाने की मुस्तहिक़ है जिसकी तालीम हमेशा हिमेश के लिए है जो हर ज़माना और उस की ज़रूरतों पर पूरी उतरने के लिए है।

प्रिय श्रोताओ ! ख़ाकसार वक़्त की रियाइत से आप अलैहिस्सलाम की महान पुस्तकों में से सिर्फ चंद एक का वर्णन करता है :

आग़ाज़-ए-जवानी में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कश्फ़ के माध्यम से ख़बर दी गई कि कुतुबी नाम की एक किताब लिखना आप के लिए मुक़द्दर है और कुतुबी लफ़्ज़ में यह हिक्मत है कि वह अपने मज़बूत दलायल और मुस्तहकम और ग़ैर मुतज़लज़ल बराहीन की वजह से सितारा की तरह उफ़ुक़ पर तलूअ होगी और दुनिया-भर को सच्चे दीन की तरफ़ राहनुमाई करने का माध्यम बनेगी। हुज़ूर अलैहिस्सलाम का यह स्वप्न बराहीन-ए-अहमदिया की इशाअत की शक्ल में पूरा हुआ। इस किताब ने एक नए इल्म-ए-कलाम की बुनियाद डाली और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सात दर्जन कुतुब का पेश-ख़ेमा साबित हुई। आप अलैहिस्सलाम ने जादुई लेखनी बराहीन-ए-अहमदिया में समस्त मज़ाहिब-ए-आलम के लीडरों, फ़ल्सफ़ियों को चैलेंज दिया कि क़ुरआन-ए-मजीद की हक़ीक़त और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सदाक़त के सबूत में जो तीन सौ अकाट्य प्रमाण क़ुरआन-ए-मजीद से निकाल कर पेश किए गए हैं अगर कोई ग़ैरमुस्लिम अपने मज़हब के अक़ायद की सदाक़त में अपनी इल्हामी किताब में से साबित करके दिखलावे या अगर संख्या में उनके बराबर पेश न कर सके तो उनमें से आधा या तीसरा हिस्सा या चौथा हिस्सा या पांचवां हिस्सा ही अपनी इल्हामी किताब से निकाल कर दिखावे या अगर दलायल पेश करने से आजिज़ हो तो हमारे दलायल ही को नंबरवार तोड़ कर दिखा दे तो बिना देरी के अपनी दस हज़ार रुपया की जायदाद उसके हवाले कर दी जाएगी। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं। "हक़ीक़त में यह किताब तालिबान-ए-हक़ को एक बशारत और मुनकिराने दीन-ए-इस्लाम पर एक हुज्जत-ए-इलाही है कि जिसका उत्तर क़यामत तक उनसे मुयस्सर नहीं आ सकता और इसी वजह से इसके साथ एक इश्तिहार भी इनामी दस हज़ार रुपया का शामिल किया गया कि ताकि हर एक मुनकिर और दुश्मन पर जो इस्लाम की हक़्क़ीत से इंकारी है समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण किया हो और अपने बातिल ख़्याल और झूठे एतिक़ाद पर मग़रूर और फ़रेफ़्ता न रहे।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 83)

आज़माइश के लिए कोई न आया हर चंद
हर मुख़ालिफ़ को मुक़ाबिल पे बुलाया हमने

प्रिय श्रोताओ! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़ुरआन की प्रतिष्ठा का एक शानदार कारनामा आपकी पसिद्ध लेखनी "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" है जो आज भी सईद फ़ित्रत और इन्साफ़ पसंदों पर अपना जादू किए हुए है। उसकी प्रतिष्ठा शान के बारे में आप अलैहिस्सलाम तहरीर फ़रमाते हैं :

"जलसा आज़म मज़ाहिब जो लाहौर टाउन हाल में 26- 27- 28 दिसंबर 1896 ई. को होगा इस में इस आजिज़

का एक मज़मून क़ुरआन शरीफ़ के कमालात के बारे में पढ़ा जाएगा। यह वह मज़मून है जो इन्सानी ताक़तों से बरतर और ख़ुदा के निशानों में से एक निशान और ख़ास उसकी सहायता से लिखा गया है इस में क़ुरआन शरीफ़ के वे हक़ायक़ और मआरिफ़ दर्ज हैं जिनसे सूरज की तरह रोशन हो जाएगा कि दर-हक़ीक़त यह ख़ुदा का कलाम और समस्त संसारों के रब की किताब है और जो शख़्स इस मज़मून को शुरू से अंत तक पांचों प्रश्नों के उत्तर में सुनेगा। मैं यक़ीन करता हूँ कि एक नया ईमान उस में पैदा होगा और एक नया नूर उस में चमक उट्ठेगा और ख़ुदा तआला के पाक कलाम की एक संक्षिप्त तफ़सीर उसके हाथ आजाएगी .. मुझे ख़ुदा-ए अलमीन ने इल्हाम से अवगत फ़रमाया है कि यह वह मज़मून है जो सब पर ग़ालिब आएगा और इस में सच्चाई और हिक्मत और मार्फ़त का वह नूर है जो दूसरी कौमें इस शर्त पर कि हाज़िर हों और उसको अव्वल से आख़िर तक सुनें शर्मिंदा हो जाएँगी और हरगिज़ क़ादिर नहीं होंगा कि अपनी किताबों के यह कमाल दिखला सकें क्योंकि ख़ुदा तआला ने इरादा फ़रमाया है कि उस रोज़ उस पाक किताब का जलवा ज़ाहिर हो। मैंने आलम-ए-कशफ़ में इस के मुतल्लिक़ देखा कि मेरे महल पर ग़ैब से एक हाथ मारा गया। और उसके छूने से इस महल में से एक नूर निकला जो इर्द-गिर्द फैल गया। और मेरे हाथों पर भी इस की रोशनी हुई। तब एक शख़्स जो मेरे पास खड़ा था वह बुलंद आवाज़ से बोला।अल्लाहु-अकबर ख़रिबत खैबर। اللہ اکبر خربت خیبر

उसकी यह ताबीर है कि इस स्थान से मेरा दिल मुराद है जिस पर अल्लाह का नूर नाज़िल होता है और वह क़ुरआन के नूर का स्रोत हैं और ख़ैबर से मुराद समस्त ख़राब मज़हब हैं जिनमें शिर्क और बातिल की मिलावट है और इन्सान को ख़ुदा की जगह दी गई या ख़ुदा की सिफ़ात को अपने कामिल मरतबे से नीचे गिरा दिया है। अत: मुझे बताया गया कि इस मज़मून के ख़ूब फैलने के बाद झूठे मज़हबों का झूठ खुल जाएगा और क़ुरआन की सच्चाई दिन-ब-दिन ज़मीन पर फैलती जाएगी जब तक कि अपना दायरा पूरा करे। फिर मैं इस कशफ़ी हालत से इल्हाम की तरफ़ मुंतक़िल किया गया और मुझे यह इल्हाम हुआ। إِنَّ اللّٰهَ مَعَكَ إِنَّ اللّٰهَ يَقُوْمُ أَيْنَمَا قُمْتَ अर्थात ख़ुदा तेरे साथ है ख़ुदा वहीं खड़ा होता है जहां तू खड़ा हो। यह इलाही मदद के लिए एक इस्तिआरा है।

(तिरयाकुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 15 पृष्ठ 227-226)

प्रिय पाठको ! इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी का यह मज़मून बिलाशुबा क़ुरआन-ए-करीम के हक़ायक़-ओ-मआरिफ़, इल्मो इरफ़ान की बे नज़ीर और अछूती तफ़सीर है और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की क़ुरआन की प्रतिष्ठा के इज़हार की कोशिशों में एक संग-ए-मील की हैसियत रखती है। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के खुदा से सहायता प्राप्त इस मज़मून ने न सिर्फ मुक़ामी तौर पर बल्कि पूरे भारत और दुनिया भर के बुद्धिमानों में ऐसा तहलका बरपा किया कि न सिर्फ अज़ीम मुफ़क्केरीन उसकी तारीफ़-ओ-तौसीफ़ में खूब लिखने लगे बल्कि उस ज़माने के अख़बारों ने भी इस मज़मून की प्रतिष्ठा का इक़रार करते हुए बरमला तौर पर यह प्रकाशित किया कि यह मज़मून सब पर बाला रहा। अत: एक अख़बार ने लिखा :

"मिर्ज़ा साहिब ने समस्त प्रश्नों के उत्तर (जैसा कि उचित था) क़ुरआन शरीफ़ से दिए और समस्त बड़े-बड़े उसूल और इस्लाम के छोटे छोटे भागो को दलायल अक़लिया से और बराहीन-ए-फ़लसफ़ा के साथ मुबर्हन और मुज़य्यन किया।" (अख़बार चौधवीं सदी रावलपिंडी बमुताबिक़ 1 फ़रवरी 1897 ई.

प्रिय पाठको! पादरी इमामुद्दीन ने "ज़ैनुल अकवाल" नाम की किताब लिख कर क़ुरआन-ए-मजीद पर हमले किए हज़रत मसीह मौऊद ने उसके उत्तर में नूरुल हक़ किताब लिखी इस में क़ुरआन-ए-करीम के मआरिफ़-ओ-हक़ायक़ का इन्किशाफ़ फ़रमाया। इस किस्म की एक दो नहीं असंख्य मिसालें आपकी तसानीफ़ में मिलती हैं। आप हर अहल मज़हब को दावत दी कि अपने मज़हब का दावा और दलील अपनी इल्हामी किताब से साबित करें। इसी असल और मयार को आपने मुबाहिसों मुनाज़रोंऔर तहरीर-ओ-तक़रीर में ख़ूब इस्तिमाल फ़र्मा कर क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा-ओ-शान को दो-बाला किया क्योंकि क़ुरआन-ए-करीम अपनी पाक और मुकम्मल तालीमात की दृष्टि से सब कुतुब समावी में यकता और मुनफरद है।

जमाल-ओ-हुस्न क़ुरआँ नूर जान हर मुसलमाँ है
क़मर है चांद औरों का हमारा चाँद क़ुरआँ है
नज़ीर उसकी नहीं जमती नज़र में फ़िक्र कर देखा
भला क्योंकर न हो यकता कलाम-ए-पाक रहमां है
बहार-ए-जावेदाँ पैदा है इसकी हर इबारत में
न वह ख़ूबी चमन में है न उससा कोई बुसताँ है

प्रिय पाठको! हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जहां ग़ैर मज़ाहिब के बिलमुक़ाबिल क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा साबित फ़रमाई वहीं अंदरूनी तौर पर उम्मत मुहम्मदिया में क़ुरआन-ए-करीम की तरफ़ मंसूब होने वाले ग़लत अक़ायद व नज़रियात को दूर फ़र्मा कर क़ुरआन-ए-करीम के तक़द्दुस और प्रतिष्ठा को क़ायम फ़रमाया। मुसलमानों में नए ग़लत अक़ीदे राह पा गए था कि ख़ुदा तआला की सिफ़त बात करने वाली अब खतम हो गई है। पहले ज़माना में वह बोलता था पर अब बोलता नहीं। दुआ की कबूलियत पर मुसलमानों का ईमान उठ गया था और वह्यी और इल्हाम के मुनकिर हो गए थे। सर सय्यद अहमद ख़ान जैसे आलिम दुआ की फ़िलोसफ़ी के ही मुनकिर हो गए थे ।

प्रिय पाठको! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत का असल मक़सद और आप अलैहिस्सलाम का सबसे बड़ा मोजिज़ा यही है कि आपने एक जीवित, दुआओं को कबूल करने वाले ख़ुदा को प्रस्तुत किया और आपके वजूद से ज़िंदा ख़ुदा की तजल्ली ज़ाहिर हुई। आप अलैहिस्सलाम ने यही साबित किया कि क़ुरआन-ए-करीम की सच्ची पैरवी करने से ज़िंदा ख़ुदा मिलता है और ख़ुदा के लज़ीज़ मुकालमा मुख़ातबा का शरफ़ अता होता है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ अपनी रूहानी ख़ासियत और अपनी ज़ाती रोशनी से अपने सच्चे पैरवी करने वालों को अपनी तरफ़ खींचता है और उसके दिल को मुनव्वर करता है और फिर बड़े-बड़े निशान दिखला कर ख़ुदा से ऐसे मज़बूत ताल्लुक़ात बना देता है कि वह ऐसी तलवार से भी टूट नहीं सकते जो टुकड़ा टुकड़ा करना चाहती है। वह दिल की आँख खोलता है और गुनाह के गंदे चशमा को बंद करता है और ख़ुदा के लज़ीज़ मुकालमा मुख़ातबा से शरफ़ बख़्शता है और उलूम ग़ैब अता फ़रमाता है और दुआ क़बूल करने पर अपने कलाम से इत्तिला देता है और हर एक जो इस शख़्स से मुक़ाबला करे जो क़ुरआन शरीफ़ का सच्चा अनुयाई है ख़ुदा अपने हैबतनाक निशानों के साथ इस पर ज़ाहिर कर देता है कि वह इस बंदा के साथ है

जो उसके कलाम की पैरवी करता है।" (चश्मा-ए-मार्फ़त, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ 305)

और फ़रमाया "श्रोताओं को यक़ीन दिलाता हूँ कि वह ख़ुदा जिसके मिलने में इन्सान की निजात और दाइमी ख़ुशहाली है, वह बजुज़ क़ुरआन शरीफ़ की पैरवी के हरगिज़ नहीं मिल सकता और निसन्देह समझो कि जिस तरह यह संभव नहीं कि हम बग़ैर आँखों के देख सकें या बग़ैर कानों के सुन सकें या बग़ैर ज़बान के बोल सकें इसी तरह यह भी मुम्किन नहीं कि बग़ैर क़ुरआन के इस प्यारे महबूब का मुँह देख सकें। मैं जवान था। अब बूढ़ा हुआ परंतु मैंने कोई न पाया जिसने बग़ैर इस पाक चशमा के इस खुली खुली मार्फ़त का पियाला पिया हो।" (इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 10 पृष्ठ 442)

क़ुरआँ ख़ुदा नुमा है ख़ुदा का कलाम है
बे उस के मार्फ़त का चमन ना तमाम है
सब जहान छान चुके सारी दुकानें देखीं
मए इरफ़ाँ का यही एक ही शीशा निकला
हक़ की तौहीद का मुरझा ही चला था पौधा
नागिहां ग़ैब से यह चश्मा-ए-असफ़ा निकला

प्रिय श्रोताओ! मुसलमानों में क़ुरआन के मुतल्लिक़ एक ग़लत अक़ीदा नासिख़ व मंसूख़ का राह पा गया था। इसलिए अल्लामा मुहम्मद बिन हज़म ने मुसलमानों के अक़ीदे के बारे में इस प्रकार वर्णन किया है।

क़ुरआन-ए-करीम में मंसूख़ आयात का अर्थ यह है कि एक आयत क़ुरआन में लिखी जा चुकी है परंतु वह काबिल-ए-अमल नहीं है सिर्फ उसकी तिलावत ही करनी चाहिए। इस पर अमल करने का हुक्म नहीं क्योंकि मंसूख़ होने की वजह से इसका हुक्म बातिल हो गया। (नासिख़ व मंसूख़, पृष्ठ : 146)

हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी रज़ियल्लाहु अन्हो ने पाँच आयात, अल्लामा सुयूति ने बीस और कुछ उल्मा ने नासिख़ मंसूख़ आयात की संख्या पाँच सौ तक बताई है। जिससे बाक़ी क़ुरआन का एतबार भी न रहा। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने निहायत तहदी से इस ग़लत अक़ीदे का खंडन करके क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा क़ायम फ़रमाई। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"हम पुख़्ता यक़ीन के साथ इस बात पर ईमान रखते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ अंतिम अकाशीय पुस्तक है और एक बिन्दु या नुक़्ता उसकी सीमा और हदूद और अहकाम और आदेशों से ज़्यादा नहीं हो सकता और न कम हो सकता है और अब कोई ऐसी वह्यी या ऐसा इल्हाम अल्लाह की ओर से नहीं हो सकता जो अहकाम-ए-फ़ुर्क़ानी की तरमीम या तंसीख़ या किसी एक हुक्म को तबदील या उसमें बदलाव कर सकता हो। अगर कोई ऐसा ख़्याल करे तो वह हमारे नज़दीक मोमिनीन की जमाअत से ख़ारिज और अलग और काफ़िर है।"

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ : 169)

प्रिय श्रोताओ! अहल-ए-हदीस की जानिब से क़ुरआन-ए-करीम पर हदीस की तक़दीम का फ़ित्ना क़ुरआन-ए-करीम के दर्जे में कमी का माध्यम बनता जा रहा था इस लिहाज़ से भी आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा ज़ाहिर फ़रमाई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मुसलमानों में क़ुरआन की हतिराम नहीं रहा। शीया हैं वे अइम्मा के कथनों को प्राथमिकता देते हैं और दूसरे फ़रीक़ हदीसों के ज़न्नी सिलसिला को क़ुरआन पर क़ाज़ी बनाते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 444)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक स्वप्न का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

आज रात मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि एक दरख़्त बारिदार और निहायत लतीफ़ और खूबसूरत और फलों से लदा हुआ है और कुछ जमात तकल्लुफ़ और ज़ोर से एक बूटी को उस पर चढ़ाना चाहती है जिसकी जड़ नहीं बल्कि चड़हा रखी है वह बूटी अफ़्तेमून की भांति है और जैसे जैसे वह बूटी उस दरख़्त पर चढ़ती है उस के फलों को नुक़्सान पहुंचाती है और इस लतीफ़ दरख़्त में एक कड़वाहट और बदशकली पैदा हो रही है और जिन फलों की इस दरख़्त से तवक़्क़ो की जाती है उनके नष्ट होने का सख़्त खतरा है बल्कि कुछ नष्ट हो चुके हैं। तब मेरा दिल इस बात को देखकर घबराया और पिघल गया और मैंने एक शख़्स को जो नेक और पाक इन्सान की सूरत पर खड़ा था पूछा कि यह दरख़्त किया है और यह बूटी किया है जिसने ऐसे लतीफ़ दरख़्त को शिकंजा में दबा रखा है तब उसने उत्तर में मुझे यह कहा यह दरख़्त क़ुरआन, ख़ुदा का कलाम है और यह बूटी वह अहादीस और अक़्वाल इत्यादि हैं जो क़ुरआन के मुख़ालिफ़ हैं या मुख़ालिफ़ ठहराई जाती हैं और उनकी कसरत ने इस दरख़्त को दबा लिया है और उसको नुक़्सान पहुंचा रही हैं तब मेरी आँख खुल गई।

(रिव्यू बर मुबाहेसा बटालवी-व-चकडालवी, रूहानी खज़ायन भाग 19 पृष्ठ 212 हाशिया)

बाग़ मुरझाया हुआ था गिर गए थे सब समर
मैं ख़ुदा का फ़ज़्ल लाया फिर हुए पैदा सिमार

प्रिय पाठको हज़रत मसीह मौऊद अलै० को इल्हाम हुआ था يَا يَحْيٰى خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ وَالْخَيْرُ كُلُّهٗ فِى الْقُرْاٰنِ और फ़रमाया कि इस में हमको हज़रत यह्या की निसबत दी गई है क्योंकि हज़रत यह्या को यहूद की उन क़ौमों से मुक़ाबला करना पड़ा था। जो अल्लाह की पुस्तक और तौरेत को छोड़ बैठे थे और हदीसों के बहुत गरवीदा हो रहे थे और हर बात में अहादीस को पेश करते थे। ऐसा ही इस ज़माना में हमारा मुक़ाबला अहल-ए-हदीस के साथ हुआ कि हम क़ुरआन पेश करते और वह हदीस पेश करते हैं।"(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 203)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "क़ुरआन-ए-करीम प्रत्येक वजह से अहादीस पर मुक़द्दम है और अहादीस की सेहत-ओ-अदम सेहत परखने के लिए वह महक है और मुझको ख़ुदा तआला ने क़ुरआन-ए-करीम की इशाअत के लिए मामूर किया है ता मैं जो ठीक ठीक मंशा क़ुरआन-ए-करीम का है लोगों पर ज़ाहिर करूँ।"

(अलहक़ मुबाहसा लुधियाना, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 4 पृष्ठ 30)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

अब ख़ुदा का इरादा है कि क़ुरआन के सही अर्थ ज़ाहिर करे। ख़ुदा ने मुझे इसीलिए मामूर किया है और मैं उसके इलहाम और वहयी से क़ुरआन शरीफ़ को समझता हूँ।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ : 450)

तथा फ़रमाया : मेरी हैसियत एक मामूली मौलवी की हैसियत नहीं है बल्कि मेरी हैसियत सुन्नते अंबिया की

सी हैसियत है। मुझे एक समावी आदमी मानो। फिर यह सारे झगड़े और समस्त दुश्मनियाँ जो मुसलमानों में पड़ी हुई हैं,एक दम में तै हो सकती हैं। जो ख़ुदा की तरफ़ से भेजा है और हक्म बन कर आया है। जो माने क़ुरआन शरीफ़ के वह करेगा वही सही होंगे और जिस हदीस को वह सही क़रार देगा वही हदीस सही होगी।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ : 399)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं :

"तुम्हारे लिए एक ज़रूरी तालीम यह है कि क़ुरआन शरीफ़ को महजूर की तरह न छोड़ दो कि तुम्हारी इसी में ज़िंदगी है जो लोग क़ुरआन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाएँगे जो लोग हर एक हदीस और हर एक क़ौल पर क़ुरआन को मुक़द्दम रखेंगे उनको आसमान पर मुक़द्दम रखा जाएगा। समस्त इंसानों के लिए समस्त ज़मीन पर अब कोई किताब नहीं परंतु क़ुरआन।" (कश्ती-ए-नूह ,रूहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 15)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

मैंने क़ुरआन के लफ़्ज़ में ग़ौर किया तब मुझ पर खुला कि इस मुबारक लफ़्ज़ में एक ज़बरदस्त भविष्यवाणी है वह यह है कि यही क़ुरआन अर्थात पढ़ने के लायक़ किताब है और एक ज़माना में तो और भी ज़्यादा यही पढ़ने के लायक़ किताब होगी जबकि और किताबें भी पढ़ने में इसके साथ शरीक की जाएँगी। इस वक़्त इस्लाम की इज़्ज़त बचाने के लिए और झूठों का खंडन करने के लिए यही एक किताब पढ़ने के काबिल होगी और अन्य किताबें क़तअन छोड़ देने के योग्य होंगी और फ़रमाया फ़ुर्क़ान के भी यही अर्थ हैं अर्थात यही एक किताब हक़-ओ-बातिल में फ़र्क़ करने वाली ठहरेगी और कोई हदीस की या और कोई किताब इस हैसियत और पाया की नहीं होगी अब सब किताबें छोड़ दो और रात-दिन किताबुल्लाह ही को पढ़ो।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 386)

प्रिय श्रोताओ! एक अहम मसला जो क़ुरआन-ए-करीम की कसर-ए-शान का मूजिब हो रहा था वह जिहाद का ग़लत नज़रिया था कि ग़ैर मज़ाहिब को जबरदस्ती के माध्यम से इस्लाम में दाख़िल किया जा सकता है और जिहाद से मुराद सिर्फ तलवार से जिहाद है। मुसलमानों में ख़ूनी महदी का तसव्वुर भी पाया जाताथा आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम की दृष्टि से जिहाद की सही तफ़सीर और हक़ीक़त वर्णन फ़रमाई कि असल जिहाद नफ़स का जिहाद है और क़ुरआन-ए-करीम की तालीमात की इशाअत और उनकी तरवीज को जिहाद-ए-कबीर से ताबीर किया।

इसी तरह आप अलैहिस्सलाम का अक़ीदा हयात-ए-मसीह का क़ुरआन-ए-करीम की 30 आयात से रद्द फ़रमा कर इस्लाम को दुबारा नई ज़िंदगी दी और क़ुरआन की प्रतिष्ठा को दो-बाला किया। आप अलैहिस्सलाम अपने मंज़ूम कलाम में फ़रमाते हैं :

मारता है उस को फ़ुरक़ाँ सर-ब-सर
इस के मर जाने की देता है ख़बर
वह नहीं बाहर रहा अम्वात से
हो गया साबित यह तीस आयात से

प्रिय श्रोताओ! अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में ख़ैर-ए-उम्मत को समस्त रूहानी इनामात की बशारत दी है लेकिन कोताह फ़हम मुसलमानों ने आयत ख़ातमन नबिय्यीन की अनुचित व्याख्या करके हर तरह की नबुव्वत के दरवाज़े को बंद समझ लिया था। आप अलैहिस्सलाम ने आयत ख़ातमन नबिय्यीन का हक़ीक़ी इर्फ़ान पेश करते हुए फ़रमाया कि ख़ातम के अर्थ मोहर के हैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इफ़ाज़ा कमाल के लिए मोहर दी गई है। अब नबुव्वत के इनाम से सिर्फ उसको सरफ़राज़ किया जा सकता है जो मोहर मुहम्मदी अपने साथ रखता हो। दामन मुस्तफ़ा से वाबस्ता हो। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"क़ुरआन एक हफ़्ता में इन्सान को पाक कर सकता है अगर सूरी या माअनवी आराज़ ना हो क़ुरआन तुमको नबियों की तरह कर सकता है अगर तुम ख़ुद इस से न भागो। सिवाए क़ुरआन किस किताब ने अपनी इबतेदा में ही अपने पढ़ने वालों को यह दुआ सिखलाई और यह उम्मीद दी कि

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ (फ़ातेहा : 6)

अर्थात हमें अपनी इन नेअमतों की राह दिखला जो पहलों को दिखलाई गई। जो नबी और रसूल और सिद्दीक़ और शहीद और सालेह थे अत: अपनी हिम्मतें बुलंद कर लूँ और क़ुरआन की दावत को रद्द मत करो कि वह तुम्हें वह नेअमतें देना चाहता है जो पहलों को दी थीं। '

(कश्ती-ए-नूह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 27)

प्रिय श्रोताओ !अल्लाह तआला ने क़ुरआन की प्रतिष्ठा क़ायम करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामको एक एज़ाज़ी निशान, तफ़सीर-ए-क़ुरआन का भी अता फ़रमाया। आपकी समस्त कुतुब ही तफ़सीर क़ुरआन का शाहकार हैं जबकि आपने एजाज़ी तौर पर ज़बान क़ुरआन, अरबी में कुछ कुतुब महिज़ तफ़सीर क़ुरआन के लिए तसनीफ़ फ़रमाएं और मुख़ालेफ़ीन को इसके मुक़ाबिल तफ़सीर नवेसी का चैलेंज भी दिया। लेकिन किसी को आपके मुक़ाबला का साहस नहीं हुआ। पीर महर अली शाह गोलड़वी को तफ़सीर नवीसी का चैलेंज देते हुए आप ने एजाज़ुल मसीह के नाम से अरबी में फ़सीह-ओ-बलीग़ सूर: फ़ातिहा की तफ़सीर प्रकाशित फ़रमाई। इस किताब के बारे में आपको इल्हाम हुआ।

مَنۡ قَامَ لِلۡجَوَابِ وَ تَنَمَّرَ

فَسَوۡفَ یَرٰی اَنَّہُ تَنَدَّمَ وَتَذَمَّرَ

अर्थात जो शख़्स ग़ुस्सा से भर कर इस किताब का उत्तर लिखने के लिए तैयार होगा वह अनक़रीब देख लेगा कि वह नादिम हुआ और हसरत के साथ उसका ख़ातमा हुआ। इलहाम-ए-इलाही के ऐन मुताबिक़ पीर महर अली शाह को इस तफ़सीर के बिल्मुक़ाबिल एक लफ़्ज़ भी लिखने की जुरात नहीं हुई आख़ि कार नादिम हो कर हसरत के साथ शिकस्त का मुँह देखना पड़ा। इस किताब की फ़साहत-ओ-बलाग़त का बरमला एतराफ़ अरब देशों के अख़बारात ने भी किया। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "मैं क़ुरआन शरीफ़ के मोजिज़ा के ज़िल पर अरबी बलाग़त फ़साहत का निशान दिया गया हूँ। कोई नहीं कि जो इस का मुक़ाबला

कर सके। (ज़रूरतुल इमाम, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 13 पृष्ठ 496)

तथा फ़रमाया "मैंने कई मर्तबा कहा है कि मेरे मुख़ालिफ़ भी एक सूरत की तफ़सीर करें और मैं भी तफ़सीर करता हूँ। फिर मुक़ाबला कर लिया जाए, परंतु किसी ने साहस नहीं की। मुहम्मद हुसैन इत्यादि ने तो यह कह दिया कि उनको अरबी का सीग़ा नहीं आता और जब किताबें पेश की गईं तो बूदे और रक़ीक़ उज़्र कर के टाल दिया कि यह अरबी तो अरबी कचालू है। परंतु यह न हो सका कि एक सफ़ा ही बना कर पेश कर देता और दिखा देता कि अरबी यह है। उद्देश्य यह निशान हैं जो खासतौर पर मेरी सदाक़त के लिए मुझे मिले हैं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 183)

प्रिय श्रोताओ! पिछले दिनों मुफ़स्सिरीन ने क़ुरआन-ए-मजीद में दर्ज नबियों और क़ौमों के वाक़ियात को महिज़ एक क़िस्सा के तौर पर वर्णन करते थे और कुछ आयात की ऐसी तफ़सीर वर्णन करते थे जिससे अंबिया का अपमान होता था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम में मौजूद अंबिया के क़िस्सों को इलमी और फ़लसफ़ा और भविष्यवाणियों का रंग देकर क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा-ओ-मार्फ़त को ज़ाहिर फ़रमाया और अंबिया की इअस्मत को क़ायम फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"जिस क़दर क़ुरआन शरीफ़ में क़िस्से हैं वह भी दरहक़ीक़त क़िस्से नहीं बल्कि वह भविष्यवाणियां हैं जो क़िस्सों के रंग में लिखी गई हैं हाँ वह तौरेत में तो ज़रूर सिर्फ क़िस्से पाए जाते हैं परंतु क़ुरआन शरीफ़ ने हर एक क़िस्सा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए और इस्लाम के लिए एक भविष्यवाणी क़रार दे दिया है और यह क़िस्सों की भविष्यवाणियां भी कमाल सफ़ाई से पूरी हुई हैं।"

(चश्मा-ए-मार्फ़त, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ : 271)

तथा फ़रमाया : "क़ुरआन शरीफ़ अपनी सारी तालीमों को उलूम की सूरत और फ़लसफ़ा के रंग में पेश करता है अत: याद रखना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ ने पहली किताबों और नबियों पर एहसान किया है जो उन की तालीमों को जो क़िस्सा के रंग में थीं, इलमी रंग दे दिया है। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि कोई शख़्स उन किस्सों और कहानियों से नजात नहीं पा सकता जब तक वह क़ुरआन शरीफ़ को न पढ़े, इसलिए क़ुरआन शरीफ़ को कसरत से पढ़ो परंतु निरा क़िस्सा समझ कर नहीं बल्कि एक फ़लसफ़ा समझ कर।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 113)

प्रिय श्रोताओ! सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम में मौजूद एक महान इल्मी मोजिज़ा जो अज़मत-ए-क़ुरआन को दो-बाला करता है ,जस्मानी और रूहानी मुरातिब सत्ता का इन्किशाफ़ करते हुए फ़रमाया :

"जिस क़दर किताबें दुनिया में आसमानी किताबें कहलाती हैं या जिन हकीमों ने नफ़स और इलाहियात के बारे में तहरीरें की हैं और या जिन लोगों ने सूफ़ियों की तर्ज़ पर मआरिफ़ की बातें लिखी हैं किसी का ज़हन उनमें से इस बात की सबक़त नहीं ले गया कि यह मुक़ाबला जिस्मानी और रूहानी वजूद का दिखलाता।

अगर कोई शख़्स मेरे इस दावे से मुनकिर हो और इस का गुमान हो कि यह मुक़ाबला रूहानी और जिस्मानी किसी और ने भी दिखलाया है। तो इस पर वाजिब है कि इस इल्मी मोजिज़ा की नज़ीर किसी और किताब में से पेश करके दिखलाए और मैंने तो तौरेत और इंजील और हिंदुओं के वेद को भी देखा है। परंतु मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि इस किस्म का इलमी मोजिज़ा मैंने सिवाए क़ुरआन शरीफ़ के किसी किताब में नहीं पाया।

(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, भाग शुशम)

या इलाही तेरा फ़ुरक़ाँ है कि इक आलम है
जो ज़रूरी था वह सब इस में मुहय्या निकला
किस से इस नूर की मुम्किन हो जहां में तशबी
वह तो हर बात में हर वस्फ़ में यकता निकला

प्रिय श्रोताओ! आख़िर पर सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के एक इक़तेबास के साथ अपनी तक़रीर को ख़त्म करता हूँ हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वर्णन हैं कि :

अत: हर अहमदी की आज ज़िम्मेदारी है कि इस अज़ीम सहीफ़ा इलाही की, इस क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत का हक़ अदा करें। अपने आपको भी बचाएं और दुनिया को भी बचाएं जिन लोगों की इस्लाम की तरफ़ तवज्जा पैदा हुई है लेकिन अहमदी नहीं हुए उनमें से बहुतों ने आख़िर हक़ीक़ी इस्लाम और हक़ की तलाश में अहमदियत की गोद में आना है इंशा अल्लाह तआला। इसके लिए हर अहमदी को अपने आपको तैयार करना चाहिए। आज जब इस्लाम की दुश्मन ताक़तें हर किस्म के हथकंडे और ओछे हथकंडे प्रयोग करने पर तुली हुई हैं, बेहूदगी का एक तूफ़ान बरपा किया हुआ है तो हमारा काम पहले से बढ़कर इस इलाही कलाम को पढ़ना है, इस को समझना है, इस पर ग़ौर करना है, फ़िक्र करना, तदब्बुर करना है और अमल करना है और पहले से बढ़कर इस कलाम के उतारने वाले ख़ुदा के आगे झुकना है ताकि उन बरकात के हामिल बने जो इस कलाम में गुप्त हैं। अल्लाह तआला हम सबको उस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।"

(ख़ुतबा जुमा 7 मार्च 2008 ई. बहवाला अख़बार बदर 1 मई 2008 ई.)

क़ुरआँ को याद रखना पाक ऐतिक़ाद रखना फ़िक्र-ए-मुआद रखना पास अपने ज़ाद रखना।
अकसीर है प्यारे सिदक़-ओ-सदाद रखना
यह रोज़ कर मुबारक सुबहान नम यरानी

آمین برحمتك یاارحم الرحمین

★ ★ ★

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH :2328-1016

दावा मुसलेह मौऊद के संबंध में वैभवशाली घोषणा

(हज़रत खलीफ़ा सानी रज़िअल्लाहु अन्हु की क़लम से) **(किस्त - 3)**

(20 फ़रवरी 1944 ई. स्थान होशियारपुर)

...जिस ज़माने में मैं ख़लीफ़ा बना हूं लोग कहते थे कि एक बच्चा जमाअत का ख़लीफ़ा बन गया है अब निश्चित ही यह जमाअत नष्ट हो जाएगी। मगर दुनिया देख रही है कि वही जमाअत जो एक बच्चे को सौंपी गई थी आज वह उसकी तुलना में कई गुना अधिक है जब वह मेरे सुपुर्द की गई थी। आज जमाअत अहमदिय्या उस समय से बीस गुना अधिक देशों में फैल चुकी है, आज जमाअत का सम्मान उस समय से बीस गुनाह अधिक बढ़ चुका है। आज जमाअत के ख़ज़ाने में उस समय से बीसयों नहीं सैंकड़ों गुना अधिक रूपया है। फिर वही व्यक्ति जिसके बारे में यह कहा जाता था कि वह अज्ञानी है ज्ञान से अनभिज्ञ है। ख़ुदा ने उसे अपने पास से ज्ञान दिया अत: मेरे माध्यम से अल्लाह तआला ने इस्लाम की समस्सयाओं के विषय में ऐसे ज्ञान इकट्ठे कर दिए हैं कि आज दुश्मन से दुश्मन भी उसकी महानता को स्वीकार करते हैं और वह मानते हैं कि इस्लाम की व्याख्या इस से बेहतर असंभव है।

कुछ समय बीता फ़ोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज के प्रोफ़ैसर मिस्टर लोकस जो अमेरिका के निवासी थे, मुझे से मिलने क़ादियान आए। बाद में उन्होंने सैलून में एक भाषण दिया जिसमें यह कहा कि ईसाई अपनी मूर्खतावश यह सोचते हैं कि उनका मिस्र से मुक़ाबला होगा। कभी वह सचोते हैं कि यदि मिस्र नहीं तो किसी अन्य इस्लामी देश से हमारा सामना होगा यह बिल्कुल ग़लत है मैं अभी एक छोटे से गांव से लौट रहा हूं। वहां रेलगाड़ी भी नहीं जाती परन्तु वहां रह कर मैंने जो कुछ देखा है उसे देखने के पश्चात् मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूं कि भविष्य में इस बात का निर्णय करना कि दुनिया का धर्म इस्लाम हो या ईसाइय्यत? यह किसी दूसरी जगह नहीं होगा केवल क़ादियान में होगा और दुनिया के किसी और पर्दे पर यह लड़ाई नहीं लड़ी जाएगी यदि यह लड़ाई लड़ी गई तो क़ादियान में ही लड़ी जाएगी मिस्र या शाम या फ़िलिस्तीन में नहीं लड़ी जाएगी। यह एक ईसाई की राय है जो इस्लाम का कट्टर शत्रु था। वह पादरी था और उसका काम लोगों को ईसाई बनाना था परन्तु क़ादियान को एक बार देखने के बाद वह पादरी इस राय को व्यक्त करने पर विवश हो गया कि यदि ईसाइयत और इस्लाम का युद्ध हुआ तो इसका निर्णय क़ादियान में होगा किसी अन्य स्थान पर नहीं होगा।

यह वे निशान हैं जिनका इन्कार कोई व्यक्ति नहीं कर सकता इन निशानों को पूरा होते हुए देख कर मनुष्य विश्वास कर सकता है कि शेष निशान भी एक दिन अवश्य पूरे होंगे। मैंने बताया है कि इस भविष्यवाणी के अधिकांश हिस्से पूरे हो चुके हैं केवल थोड़ी सी बातें हैं जिनके लिए अभी थोड़ा और इंतज़ार करना होगा। बहरहाल यह एक शादनदार आकाशीय संकेत है जिसको देख कर मोमिनों के दिल इस विश्वास से भर जाते हैं कि हमारा ख़ुदा एक जीवित ख़ुदा है। मैं इस अवसर पर विशेष रूप से जमाअत के मित्रों का ध्यान आकर्षित करता हूं कि इस निशान (संकेत) के बाद आप लोग अच्छी तरह (भली भांति) से समझ लें कि जिस व्यक्ति के हाथ पर आप लोगों ने बैअत की है उसके लिए यह अनिवार्य किया गया है कि वह संसार में ख़ुदा की बादशाहत को स्थापित करे। अत: आप लोगों पर एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी आ गई है। आपका काम यह है

कि उस समय तक राहत की सांस नहीं लेनी है जब तक ख़ुदा की बादशाहत उसी तरह पृथ्वी पर नहीं हो जाती जिस तरह वह आकाश पर है और जो लोग अभी हमारी जमाअत में शामिल नहीं हैं उनसे कहता हूं कि कब तक इंतज़ार करते रहोगे? जो आने वाला था आ गया अब इसके बाद कोई नहीं जो तुम्हारी आशाओं के अनुरूप आकाश से उतरेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों में लिखा है कि चाहे क़यामत तक नाक रगड़ते रहो तुम्हारा मसीह आकाश से नहीं उतर सकता जिसने आना था वह आ चुका।

(तज़किरतुश्शहादतैन पृष्ठ 67, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 67)

इसी तरह मैं कहता हूं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार जिस मसील (रूप) तथा नज़ीर (उदाहरण) ने संसार में आना था वह आ चुका है अब चाहे क़यामत तक प्रतीक्षा करते रहो अब और कोई व्यक्ति इस भविष्यवाणी का प्रतीक नहीं हो सकता।

अत: हमारी जमाअत को इस स्थान पर एकत्रित हो कर अपनी ज़िम्मेदारियों को समझना चाहिए। यह मकान जो सामने दिखाई दे रहा है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने चालीस दिनों तक चिल्ला कशी की और अल्लाह तआला से दुआएं मांगी उस समय शहर के एक किनारे पर हुआ करता था। लेकिन अब शहर की आबादी विकसित हो चुकी है और इसके इर्द-गिर्द भी कई इमारतें बन गई हैं यहां ख़ुदा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक महान निशान की ख़ुशख़बरी दी जिसे अठावन साल बाद हमारी जमाअत ने अपनी आंखों से पूरे होते हुए देख लिया। यह एक निशान है और एक बहुत बड़ा निशान। यदि हमारी जमाअत इस बात पर विश्वास करती है कि यह चिन्ह ख़ुदा ने प्रकट किया है तो जमाअत को यह भी विश्वास करना चाहिए कि अब दो बातों में से एक बात अवश्य घटित होने वाली है। या तो शैतान द्वारा इस्लाम पर कोई गंभीर हमला होने वाला है जिसकी रक्षा के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन तथा धन का बलिदान देना पड़ेगा या फिर शीघ्र ही ग़ैर-इस्लामी दुनिया पर कोई ऐसा गंभीर हमला होने वाला है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्राण तथा अपना धन का बलिदान देना पड़ेगा। दोनों स्थितियां ऐसी हैं जिसमें बलिदान देना होगा, दोनों स्थितियों ऐसी हैं जिस में अपने प्राणों तथा संपत्ति को एक तिरस्कृत वस्तु की भांति ख़ुदा के मार्ग में पेश करना होगा। अत: प्रत्येक अहमदी जो आज इस जलसे में मौजूद है उसे समझना चाहिए कि अब दो बातों में से एक बात अवश्य होनी है या तो इस्लाम पर कुफ़्र का कोई नया हमला होने वाला है और या फिर इस्लाम का कुफ़्र के क़िले पर हमला होने वाला है। बेशक आप लोगों ने पहले भी बलिदान दिए हैं परन्तु भविष्य में आने वाले बलिदानों की तुलना में वह बलिदान बहुत कम हो जाएंगे तथा वही व्यक्ति इस परीक्षा में सफ़ल होगा जो अपना जीवन और अपनी संपत्ति, अपनी पत्नी तथा अपने बच्चों को क़ुर्बान करने में एक पल के लिए भी संकोच नहीं करेगा। वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरह आगे बढ़ेगा और जिस प्रकार इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की आज्ञा के अधीन अपने एकमात्र बच्चे के गले पर छूरी रख दी थी इसी प्रकार वह अपनी हर इच्छा, अपने हर सम्मान, अपनी हर संपत्ति तथा अपने हर आराम पर छुरी फैर कर लब्बयक कहता हुआ अल्लाह तआला की आवाज़ की तरफ़ दोड़ेगा। उसकी आत्मा आस्ताने ईलाही पर गिर जाएगी उसका हृदय ईमान से पुर होगा और

वह अपनी प्रत्येक वस्तु को निरर्थक तथा तिरस्कृत समझते हुए ख़ुदा तआला के लिए बलिदान कर देगा। उसकी आँखों में ख़ुदा के अतिरिक्त किसी दूसरे का दिव्य (प्रकाश) नहीं होगा। उसके दिल पर सिवाए ख़ुदा के किसी अन्य का राज (शासन) नहीं होगा और उसके कानों में उसके मामूर तथा मुरसल के सिवाए किसी दूसरे की आवाज़ नहीं आएगी वह एक कर्तव्यनिष्ठ सैनिक की भांति कुफ्र का मुक़ाबला करने के लिए निकलेगा और उस समय तक वापस नहीं लौटेगा जब तक कुफ्र को मिटा नहीं देता या इस संघर्ष में स्वयं की आहुति नहीं दे देता।

अत: आज मैंने वह ज़िम्मेदारियां जो अल्लाह तआला की ओर से मुझे दी गई थीं पूरी कर दी है। मैंने जमाअत पर हुज्जत कर दी और मैंने होशियारपुर के रहने वालों को बता दिया है कि ख़ुदा ने इस स्थान को बहुत बड़ा सम्मान दिया है। इसी स्थान से उस निशान का एेलान हुआ जिसे ख़ुदा ने दया का चिन्ह घोषित किया है और अनुग्रह तथा दया का चिन्ह घोषित किया है अत: अपने वादे के अनुसार ख़ुदा इस चिन्ह को लोगों के लिए दया और अनुग्रह के चिन्ह के रूप में ही तब तक रखेगा जब तक वह उसके दया और कृपा के चिन्ह को खंडित कर कि आलिमे कबाब वाले चिन्ह की मांग न करें किन्तु यह सब कुछ आप लोगों के नियन्त्रण (शक्ति) में है। आप के अधिकार में है कि यदि चाहें तो उसके दया और अनुग्रह के चिन्ह को अपने में देखें और यदि चाहें तो उसके आलिमे कबाब (सर्वव्यापकता) के चिन्ह को स्वयं में देखे (अवलोकन करे)। ख़ुदा तआला के मामूर जो दुनिया के मार्गदर्शन के लिए आते हैं उनके एक हाथ में उपचार का प्याला होता है तथा उनके दूसरे हाथ में विष का प्याला होता है और लोगों की क्षमता में है कि वह यदि चाहें तो विष का प्याला पी लें और यदि चाहें तो उपचार का प्याला पी लें। अत: अपने कार्यों द्वारा आपने रहमत (दया) का निशान देखना है तथा अपने कार्य द्वारा ही आप लोगों ने उसके आलिमे कबाब होने वाले निशान का अवलोकन करना है। ख़ुदा के पास दोनों चीज़ें मौजूद हैं। उसके पास मौत (मृत्यु) भी है और उसी के पास जीवन भी है मगर वह व्यक्ति कितना बदनसीब है जो ज़िन्दा व क़ायम ख़ुदा से मौत मांगने के लिए तैयार हो जाता है मगर जीवन माँगने के लिए तैयार नहीं होता। कितने लोग है जो नबियों से कहते हैं हमें कोई ऐसा निशान (संकेत) दिखाओ जिसके परिणामस्वरूप यदि हम झूठे हैं तो नष्ट हो जाएं। यह बदनसीब कभी यह नहीं सोचते कि वह तबाही और बर्बादी का निशान मांगने के बजाय हिदायत और रहमत का निशान क्यों नहीं मांगते हालांकि रहमत (दया) भी उसके निशानों में से एक निशान है जिस प्रकार विनाश उसके निशानों में से एक निशान है। अत: अगर दुनिया अल्लाह तआला के इस महान रहमत (आशीष)के निशान से लाभ उठाना चाहे तो अल्लाह तआला अपनी रहमत के निशान (संकेत) उसे दिखा देगा और यदि वह बर्बादी का निशान देखना चाहे तो उसे याद रखना चाहिए कि जिस ख़ुदा के पास जीवन है उसी ख़ुदा के पास तबाही (विनाश) भी है आकाश पर जब दुनिया की तबाही तथा विनाश का निर्णय कर दिया जाता है तो न बादशाह उसके विनाश को रोक सकता हैं न पार्लियमेंट उसके विनाश को रोक सकती है, न संस्थाएं उस विनाश से बच सकती हैं न जमाअतें उस विनाश से सुरक्षित रह सकती हैं। जब आकाश से अज़ाब (दंड) उतरता है उस समय बड़े-बड़े बादशाह उसके दंड का शिकार हो जाते हैं और कोई हुकूमत तथा कोई साम्राज्य तथा दिनया की कोई शक्ति उनको दण्ड से सुरक्षित नहीं रख सकती। लेकिन जब रहमत का निशान प्रकट होता है तो उस समय साधारण कर्मों के अद्‌भुत लक्षण प्रकट होते हैं और सभी

दिशाओं में आशीर्वाद तथा प्रकाश का दरिया लहराता हुआ दिखाई देता है। अतएव आज मैंने अपने कर्तव्य को पूरा कर दिया और मैंने सब लोगों को बता दिया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वह पेशगोई जो आपने अपने एक लड़के के बारे में बताई थी और जिसमें बताया था कि वह पृथ्वी के किनारों (छोर) तक प्रसिद्धी पाएगा मेरे द्वारा पूरी हो चुकी है और मैं ही आपका मौऊद पुत्र हूं जिसका वर्णन उस विज्ञापन में किया गया था जिसे आपने 20 फ़रवरी 1882 ई. को प्रकाशित किया।

मैं इस पेशगोई पर विस्तार से रोशनी डालना चाहता था मगर क्योंकि अभी समय नहीं है इसलिए मैं अपने भाषण को समाप्त करता हूं। अब विभिन्न देशों के प्रतिनिथि बार-बारी भाषण देंगे और बताएंगे कि इस भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम का नाम दुनिया के किनारों तक मेरे द्वारा तथा मेरे भेजे हुए आदमियों (उपदेशकों) द्वारा पहुंचा है।

(हुज़ूर के इस इर्शाद पर विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार हज़रत मुसलेह मौऊद द्वारा हज़रत अक़दम मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम धरती के किनारों तक पहुंच चुकी है।)

इसके बाद हुज़ूर ने अपना भाषण जारी रखते हुए फ़रमाया :

इस समय विभिन्न देशों के प्राचरकों ने आप लोगों को बताया है कि किस प्रकार मेरे ज़माने में अल्लाह तआला ने दुनिया के किनारों तक इस्लाम और अहमदिय्यत का नाम पहुंचाया। पश्चिम के अन्तिम किनारों अर्थात् उत्तरी अमेरिका आदि से ले कर पूर्व के अन्तिम किनारों अर्थात् चीन और जापान आदि तक अल्लाह तआला ने मुझे इस्लाम का नाम और उसकी शिक्षा को पहुंचाने का सौभाग्य प्रदान किया। इसी तरह एशिया और यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में अल्लाह तआला ने मेरे द्वारा भेजे गए प्रचारकों के माध्यम से लोगों को इस्लाम तथा अहमदिय्यत में प्रवेश करने में सक्षम बनाया, और इस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वह पेशगोई पूरी हुई जिस में अल्लाह तआला ने आपसे यह वादा किया था कि **"मैं तेरी तब्लीग़ (उपदेश, प्रचार) को पृथ्वी के किनारों तक पहुंचाऊंगा"** (तज़किरह पृष्ठ 312 चतुर्थ एडिशन)

और साथ ही आपकी वह पेशगोई पूरी हुई जिसमें आपने फ़रमाया था कि **"मेरा एक पुत्र होगा जो पृथ्वी के किनारों तक प्रसिद्ध (मशहूर) होगा"** जिसके अर्थ यह थे कि वह प्रथम भविष्यवाणी जो पृथ्वी के किनारों तक तब्लीग़ (प्रचार) के पहुंचने से संबंधित है वह मेरे इस पुत्र के माध्यम से पूरी होगी जिसने पृथ्वी के किनारों तक प्रसिद्धि प्राप्त करनी है।

अब प्रत्येक व्यक्ति ध्यान से देखे कि वह कौनसा हाथा था जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की तब्लीग़ (प्रचार) को दुनिया के किनारों (अंत) तक पहुंचाने का निर्णय किया। वह कौन सा हाथ था जिसने इस तब्लीग़ को उस समय तक दुनिया के किनारों तक पहुंचने से रोका जब तक वह पुत्र प्रकट नहीं हो गया। और फिर वह कौन सा हाथ था जिसने मेरे मुबल्लिग़ों (प्रचारकों) द्वारा जापान से लेकर उत्तरी अमेरिका तक पूरी दुनिया में इस सिलसिले को फैलाना शुरू कर दिया अपितु हर देश के लोगों को इसमें प्रवेश करने का अवसर दिया। इनमें हज़ारों ऐसे लोग हैं जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम सुनना भी नहीं चाहते थे मगर अब वह आप पर दुरूद और सलाम भेजेते हैं और सुब्ह और शाम आपकी श्रेष्ठता की

बुलन्दी (उच्चतम श्रेष्ठता) के लिए प्रार्थनाएं करते हैं। हज़ारों लोग ऐसे हैं जो ख़ुदा तआला के नाम से परिचित नहीं थे मगर ख़ुदा तआला ने मेरे माध्यम से उन लोगों को अपने आस्ताने पर ले आया। केवल ख़ुदा का ही हाथ था जिसने सभी बाधाओं को दूर किया और केवल ख़ुदा का ही हाथ था जिसने अपने वचन को पूरा करने के लिए मेरे द्वारा पृथ्वी के किनारों तक इस्लाम और अहमदिय्यत का नाम पहुंचाया। अतः जिस स्थान से यह भविष्यवाणी की गई थी उसी स्थान के सामने खड़े हो कर आप लोगों के सामने इसकी घोषणा करता हूं ताकि आप लोग गवाह रहें कि ख़ुदा की भविष्यवाणी पूरी हो गई है। इस भाषण को दौरान कुछ ऐसे देशों का भी उल्लेख किया गया जहां विशेष रूप से अहमदियों को कष्ट दिए गए हैं अतः कुछ देशों में हमारे प्रचारकों पर पत्थराव किया गया और कुछ देशों में हुकूमतों ने उन्हें निर्वासित (देश से निकालना) कर दिया। मगर मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि जिस जिस देश की सरकार ने हमारे प्रचारकों के साथ ऐसा व्यवहार किया था ख़ुदा ने उन हुकूमतों को दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ा। वह बड़े-बड़े देशों में जहां हमारे प्रचारकों के साथ कठोर व्यवहार किया गया अफ़ग़ानिस्तान, रूस, पौलेंड और अल्बानिया हैं। वे वह देश हैं जहां अहमदियों पर विशेष रूप से अत्याचार किए गए और हुकूमतों ने या तो हमारे प्रचारकों को मार डाला या उन्हें देश से निकाल दिया।

अतः मैं उन लोगों से जो अभी जमाअत में शामिल नहीं हैं ध्यान दिलाता हूं कि पश्चिम के किनारों से पूर्व के अन्तिम किनारों तक हम इस्लाम का प्रचार कर रहे हैं हम लोग चाहते हैं कि आप भी इस सिलसिले की प्रमाणिकता पर विचार करें और ख़ुदा तआला के उन निशानों से लाभ उठाएं जो दुनिया में प्रकट हो चुके हैं और यदि आप लोग अभी इस सिलसिले की प्रमाणिकता पर निचार नहीं कर सकते तो कम से कम ख़ुदा तआला का भय अपने दिल में इतना अवश्य पैदा करें कि जब इस जमाअत के लोग इस्लाम के प्रचार के लिए निकलें तो उस समय उनका विरोध करने से बचें और समझ लें कि यह वार (हमला) उन पर नहीं ख़ुदा के दीन (धर्म) पर होगा और इसका नुक़सान (हानि) लोगों को नहीं अपितु धर्म और इस्लाम को होगा। इसी प्रकार मैं उन लोगों से भी जो अभी इस्लाम की प्रमाणिकता के प्रति आश्वस्त नहीं हैं, उनसे कहता हूं कि हम मुबल्लिग़ (धर्म का प्रचार करने वाले) हैं प्रचार करना हमारा काम (कर्तव्य) है और यह काम हमने हमेशा करना है चाहे कोई हिन्दू हो, सिक्ख हो, ईसाई हो हमारा कर्तव्य है कि हम उसे तब्लीग़ करें और इस्लाम की शिक्षा उस तक पहुँचाएं। मैं यह नहीं कहता कि उपदेश देना केवल हमारा अधिकार है उनका भी अधिकार है कि वह भी उपदेश दें। हमें इस पर कोई शिकायत नहीं है लेकिन इसके मुक़ाबले में यह महत्वपूर्ण है कि वह हमारे प्रचार पर चढ़े नहीं। हम विवश हैं कि हम न्रमता और प्रेम तथा मुहब्बत से उनको तब्लीग़ करें और जम हमें यह विश्वास है कि ख़ुदा तआला की इच्छा यही है कि लोग इस धर्म को अपनाएं तो चाहे फिर लोग हमें मारें, पीटें, गालियां दें हम उन्हें इस्लाम का प्रचार करते रहने के लिए विवश हैं। किसी का बच्चा कुएं में गिर रहा हो तो दूसरा व्यक्ति उसे देख कर चुप नहीं रह सकता। किसी जगह आग लग रही हो तो कोई व्यक्ति उस आग को देख कर आराम से बैठ नहीं सकता। फिर जब कि हमें भी उन से वैसी ही मुहब्बत है जैसे एक पिता को अपने बेटों से या भाई को अपन भाई से होती है और जब कि हम समझते हैं कि जो लोग इस्लाम में दाख़िल नहीं हैं वह एक आग में गिरे हुए हैं तो फिर हम पूरा प्रयास करेंगे कि वह इस आग से बच जाएं चाहे इस संघर्ष में हमारे अपने प्राण

क्यों न चले जाएं। अत: तब्लीग़ के लिए प्रयत्न करना हमारा कर्तव्य है और हम अपने इस कर्तव्य को सदैव निभाते रहेंगे लकिन आप लोग यह न समझें कि आप ख़ुदा की तक़दीर (प्रारब्ध) को पूरा होने से रोक सकते हैं। **ख़ुदा की नियती एक दिन पूरी हो कर रहेगी और यह सिलसिला पूरी पृथ्वी पर फैल जाएगा कोई नहीं जो इस सिलसिले को फैलने से रोक सके। मैं आसमान को साक्षी मान कर कहता हूं, मैं ज़मीन को साक्षी मान कर कहता हूं, मैं होशियारपूर की एक-एक ईंट को गवाह बना कर कहता हूं कि यह सिलसिला दुनिया में फैल कर रहेगा। यदि लोगों के हृदय कठोर होंगे तो फ़रिश्ते उनको अपने हाथों से सहलाएंगे यहां तक कि वह नरम हो जाएंगे और उनके लिए अहमदिय्यत में प्रवेश हुए बिना कोई चारा (विकल्प) नहीं होगा।**

मेरी आप बीती घटना है जब मैं दमिश्क गया तो अब्दुल क़ादिर मग़रबी जो उस क्षेत्र के इस्लामी तहरीकात की मजलिस के सदर (अध्यक्ष) थे मुझे मिलने आए और बातों-बातों में कहने लगे हिन्दुस्तानी लोग जाहिल (अज्ञानी) हैं वह इस्लाम तथा क़ुर्आन से परिचि (अवगत) नहीं हैं और इसी अपरिचितता (अनभिज्ञता) का लाभ उठा कर आपने उन लोगों में अपने सिलसिले को फैलाया है। अरबी लोग क़ुर्आन की भाषा को जानते हैं वह अच्छी तरह अवगत हैं कि इस्लाम और क़ुर्आन क्या कहता है इसलिए यहां इन आस्थाओं का नाम कदापि न लें और याद रखें कि एक अरब भी आपके सिलसिले को स्वीकार नहीं कर सकता। मैंने उन्हें कहा कि आप कहते हैं कि क्योंकि हिन्दुस्तानी लोग अज्ञानी हैं इसलिए उनमें हमारा सिलसिला फैल गया अरब का कोई व्यक्ति हमारे सिलसिले को स्वीकार नहीं कर सकता मैं यहां से जाते ही अपना मिशन भेजूंगा और उस समय तक इस क्षेत्र को नहीं छोड़ूंगा जब तक अरबों में से कई लोग अहमदी न बना लूं। इसलिए मैंने वापस आते ही अपने प्रचारकों को इस क्षेत्र में भिजवा दिया और अब बड़े-बड़े डॉक्टर, बैरिस्टर और पढ़े-लिखे लोग हमारे सिलसिले में दाख़िल हो चुके हैं और वह अहमदिय्यत के लिए हज़ारों रुपए ख़र्च कर रहे हैं। अत: यह नहीं हो सकता कि दुनिया इन्कार करे और इन्कार करती रहे, यह हो ही नहीं सकता कि जिसे ख़ुदा ने भेजा है उस पर लोग ईमान न लाएं **मगर धन्य हैं वह जो ईमान लाते हैं, धन्य हैं वह जो ख़ुदा की आवाज़ को सुनते और उस पर लब्बयक कहते हुए आगे बढ़ते हैं क्योंकि जो व्यक्ति ख़ुदा के मामूर की आवाज़ सुनता है वह वास्तव में ख़ुदा की आवाज़ सुनता है और जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के मामूर की आवाज़ को अस्वीकार करता है वह वास्तव में ख़ुदा तआला की आवज़ को अस्वीकार करता है। अतः बहुत ही दुर्भाग्य होगा यदि लोग ईमान न लाएं और ख़ुदा के इस मामूर को स्वीकार न करें जिसे ख़ुदा ने उनके मार्गदर्शन के लिए भेजा है।**

(इसके बाद हुज़ूर उस कमरे में तशरीफ़ ले गए जहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1886 ई. में चिल्ला कशी फ़रमाई थी और क़िबले की ओर बैठ कर इस्लाम की प्रगति तथा उसकी बुलंदी के लिए बहुत दर्द से दुआ करवाई।) (समाप्त)

(दावा मुसलेह मौऊद' के संबंध में वैभवशाली घोषणा पृष्ठ 38-45)

★ ★ ★

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq Anwar-ul-Haq
Eajaz-ul-Haq Rizwan-ulHaq

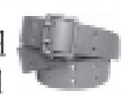

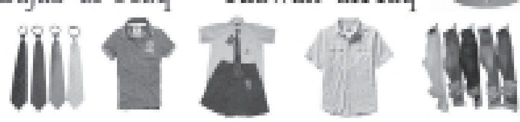

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

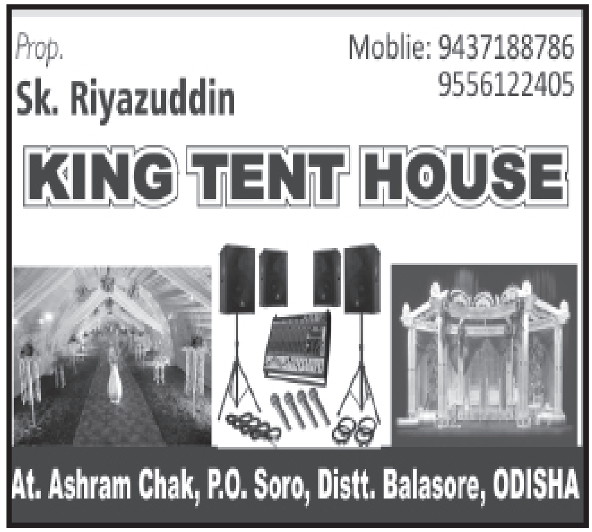
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT
Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3